अक्टूबर- 2024, वर्ष 33, अंक 63

उत्तर प्रदेश संदेश

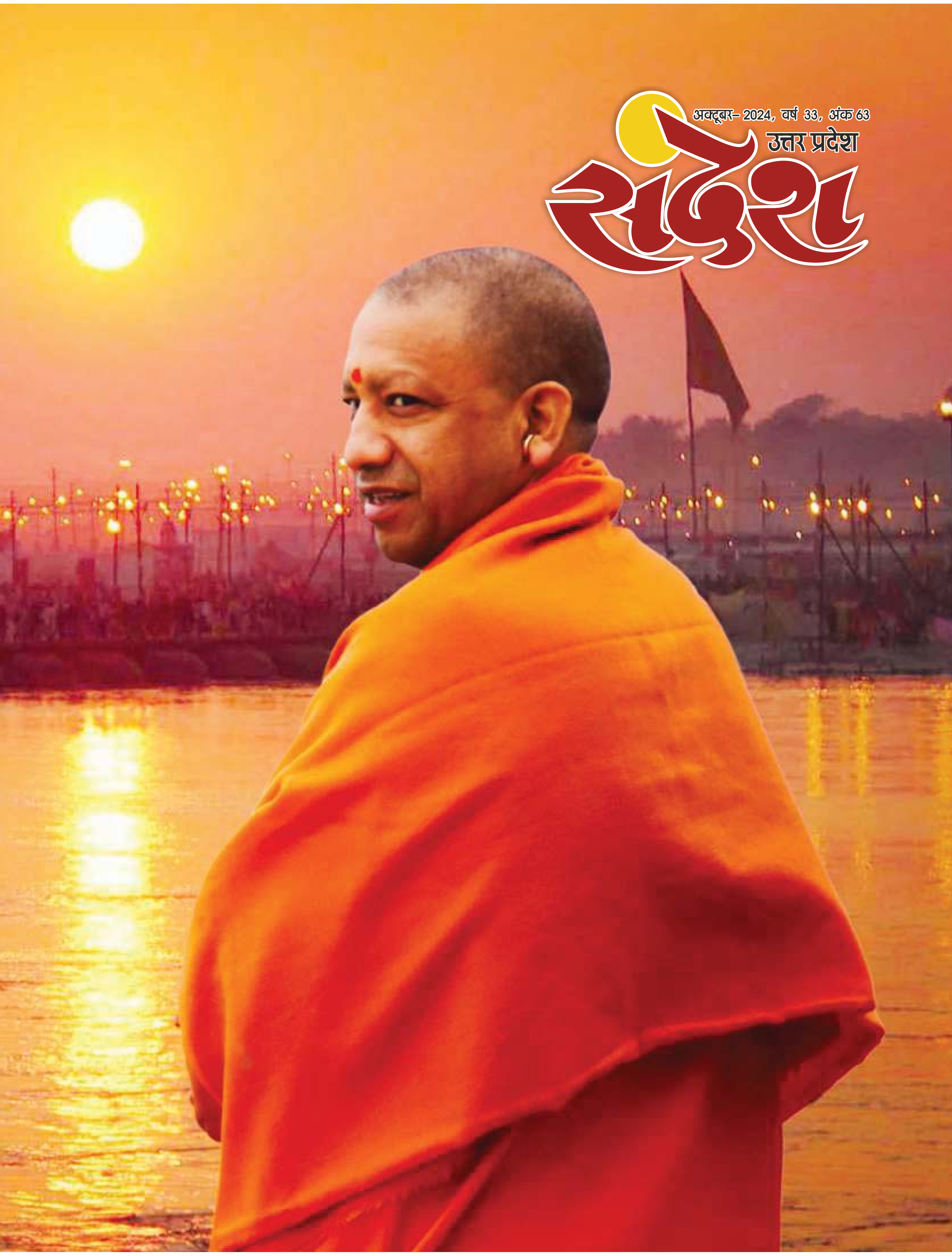

पूरी हुई सबकी आस
मिला पक्का आवास

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) में उत्तर प्रदेश का लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन

15.76 लाख आवास का निर्माण पूर्ण कर देश में प्रथम

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) अवॉर्ड-2019 एवं 2021 में उत्तर प्रदेश का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

लाभार्थी आधारित व्यक्तिगत आवास निर्माण (बी.एल.सी.) घटक

- स्वीकृत आवासों के सापेक्ष 15,42,168 पर कार्य प्रारंभ, 13,80,194 पूर्ण

प्रथम किस्त	15,30,554 लाभार्थियों को ₹7,652.77 करोड़ हस्तांतरित
द्वितीय किस्त	14,85,766 लाभार्थियों को ₹22,091.18 करोड़ हस्तांतरित
अंतिम किस्त	13,51,655 लाभार्थियों को ₹6,712.74 करोड़ हस्तांतरित

- समस्त धनराशि डीबीटी के माध्यम से लाभार्थियों के बैंक खातों में हस्तांतरित
- सभी लाभार्थियों के बैंक खातों में डीबीटी से धनराशि हस्तांतरण में अग्रणी राज्य

भागीदारी में किफायती आवास (ए.एच.पी.) घटक

- स्वीकृत 64,890 आवासों के सापेक्ष 40,849 आवास पूर्ण

क्रेडिट लिंक सब्सिडी स्कीम (सी.एल.एस.एस.) घटक

- 1,55,456 लाभार्थियों को ब्याज अनुदान अवमुक्त

ग्लोबल हाउसिंग टेक्नोलॉजी चैलेंज-इंडिया

- लखनऊ की अवध विहार योजना में लाइट हाउस प्रोजेक्ट
- परियोजना लागत ₹130.90 करोड़
- नवीनतम तकनीक से निर्मित 1,040 आवास

नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन विभाग, उत्तर प्रदेश | राज्य नगरीय विकास अभिकरण (सूडा), उत्तर प्रदेश

अक्टूबर-2024, वर्ष 33, अंक 63
उत्तर प्रदेश
संदेश

संरक्षक एवं मार्गदर्शक :
संजय प्रसाद
प्रमुख सचिव, सूचना

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी :
शिशिर
सूचना निदेशक

सम्पादकीय परामर्श :
अंशुमान राम त्रिपाठी
अपर निदेशक, सूचना

डॉ. मधु ताम्बे
उपनिदेशक सूचना

डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक निदेशक, सूचना

प्रभारी सम्पादक :
दिनेश कुमार गुप्ता
उपसम्पादक, सूचना

अतिथि सम्पादक :
कुमकुम शर्मा

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
ईमेल : upsandesh20@gmail.com
दूरभाष कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 9412674759, 7705800978

उत्तर प्रदेश सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित
भारत सरकार के रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या : 55884/91

प्रकाशित सामग्री में विभिन्न लेखकों के दृष्टिकोण एवं विचार से सूचना विभाग की सहमति अनिवार्य नहीं हैं। लेखों में प्रयुक्त आंकड़े अनन्तिम हो सकते हैं।

इस अंक में

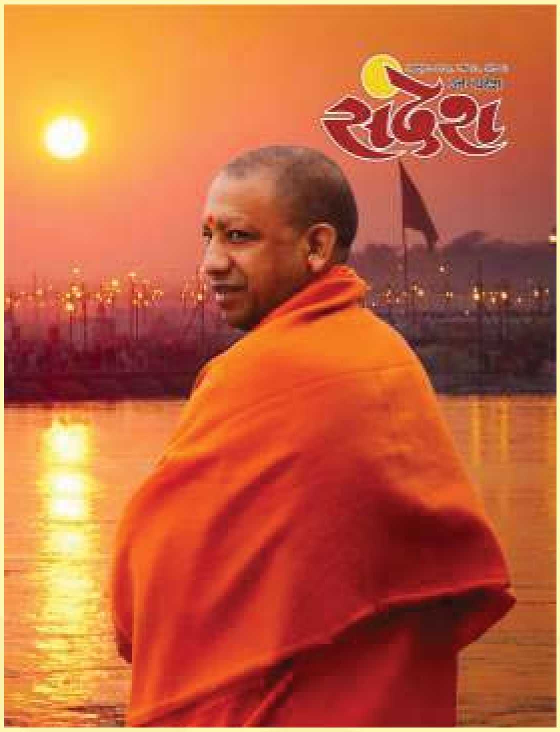

◆ जौं चाहसि उजियारा 3
–रतिभान त्रिपाठी

◆ आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम 6
–प्रदीप उपाध्याय

◆ यूपी बना ड्रीम डेस्टिनेशन 9
–डॉ. सुयश मिश्रा

◆ यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो में दिखी ब्रांड यूपी की धमक 13
–सरिता त्रिपाठी

◆ वनटॉगिया : वन से रैम्प तक 16
–इन्द्रमणि

◆ सूर्य के प्रकाश से रौशन करिए अपना घर आँगन 18
–शिव शंकर गोस्वामी

◆ प्रदेश में ही बीज उत्पादन की रणनीति तैयार 21
–जितेन्द्र शुक्ला

◆ अयोध्या के श्रीराम और श्रीराम की अयोध्या 25
–प्रदीप कुमार गुप्ता

◆ यूपी एग्रीज योजना से समृद्ध होंगे किसान 29
–डॉ. सौरभ मालवीय

सम्पादकीय

सूर्य के प्रकाश से रौशन हो प्रदेश

मुख्यमंत्री योगी आदित्नाथ के कुशल निर्देशन में विगत वर्षों में अनेक जन कल्याणकारी निर्णय लिए गए। इस क्रम में उत्तर प्रदेश सरकार ने बड़े पैमाने पर स्थापना लक्ष्यों के साथ महत्वाकांक्षी सौर नीति की भी शुरूआत की और इसे तेज़ी से लागू करना भी शुरू कर दिया। राम की नगरी अयोध्या को पहला सौर शहर बनाने की योजना प्रारम्भ की गई। इसके अतिरिक्त वाराणसी तथा प्रदेश के अन्य शहरी को भी अभियान चलाकर सौर ऊर्जा से रौशन किया जा रहा है। नई सौर नीति के तहत उत्तर प्रदेश सरकार ने केन्द्रीय वित्तीय सहायता के अतिरिक्त भी सब्सिडी देने की योजना बनाई है। उत्तर प्रदेश में तीन सौ से ज्यादा दिनों तक तेज़ धूप रहती है। मुख्यमंत्री जी का कहना है कि इस भरपूर धूप को आसानी से बिजली में परिवर्तित किया जा सकता है। इस दिशा में अति गम्भीरता से अभियान चलाकर कार्य किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि पीएम सूर्य घर योजना का लाभ लेने में लखनऊ अव्वल रहा है। उन्होंने बताया कि सरकार 25 लाख रूफ टॉप लगाने के संकल्प के साथ काम कर रही है। सौर उर्जा के जरिए देश में बिजली समस्या को हमेशा के लिए समाप्त करने और जनता को करीब-करीब निःशुल्क बिजली देने का अभियान उत्तर प्रदेश में तेज गति से आगे बढ़ रहा है। घर की छतों पर सोलर रूफ टॉप पैनल लगाने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के सभी 75 जिलों के लिए अलग-अलग लक्ष्य निर्धारित किए हैं। मुख्यमंत्री स्वयं इस योजना की निरन्तर मॉनीटरिंग कर रहे हैं। जल्दी ही शुरू हुई पीएम सूर्य घर योजना के अन्तर्गत मात्र सात महीने में ही लखनऊ जनपद में सर्वाधिक रूफ टॉप पैनल इंस्टॉल किये गये हैं। इसी क्रम में वाराणसी, कानपुर, आगरा, और कानपुर नगर टॉप फाइव में हैं।

मुख्यमंत्री आने वाले त्योहारों को लेकर भी सतर्क हैं उन्होंने घोषणा की हैं कि प्रदेश में 28 अक्टूबर से लेकर 15 नवम्बर तक पूरे प्रदेश को 24 घंटे बिजली की उपलब्धता रहेगी। कानून व्यवस्था पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि प्रदेश में शान्ति का माहौल रहे।

सम्पादक

जौं चाहसि उजियार

–रतिभान त्रिपाठी

सत्ता और समाज के बीच संतुलन के राम एक उदाहरण हैं। इसीलिए राजधर्म की सबसे आदर्श अवस्था रामराज्य मानी गई है। राम के अपने जीवन चरित्र से सर्वश्रेष्ठता के अनुकरणीय उदाहरण मिलते हैं। हर युग हर काल खण्ड में राम से श्रेष्ठ कोई साबित नहीं हुआ है और इसीलिए राम समाज के लिए बारंबार अपरिहार्य हैं। राम को अपनाने वाले तो धन्य होते ही हैं लेकिन राम ने उनकी भी उपेक्षा नहीं की जो उनके प्रतिपक्ष में रहे हैं। राम आदर्शों के ही नहीं, राजनीति के भी शलाका पुरुष हैं। वह लोकतंत्र के परम उपासक और प्रबल समर्थक रहे हैं।

राम को जानना समझना अति कठिन है फिर भी लौकिक दृष्टि से पूछें कि आखिर राम हैं क्या! तो अनेकानेक प्रश्न उभरेंगे, अनेकानेक उत्तर मिलेंगे। राम अध्यात्म, चिंतन, भक्ति, शक्ति और पुरुषार्थ के प्राणतत्व हैं। राम राजा हैं, लेकिन लोकतंत्र के सजग रक्षक हैं। तभी तो वो कहते हैं– ''जौ अनीति कछु भाखौं भाई। तौ मोहिं बरजेहु भय बिसराई।।'' (श्रीरामचरितमानस)। राम शक्तिपुंज हैं लेकिन दीन दुखियों के रक्षा कवच हैं। इसीलिए एक दुखी प्राणी की पुकार इस विश्वास के साथ आती है– ''मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुबीर।'' राम राजकुमार हैं लेकिन तपसी भेष में वन–वन भटकते हैं। राम अभिजात्य हैं किन्तु सबको गले लगाते हैं।

राम राजा हैं किन्तु साम्राज्यवादी नहीं हैं। लंका विजय के बाद भी लंका पर शासन नहीं करते हैं। राम क्षेत्रवादी नहीं, समस्त लोक उन्हें प्रिय है। राम विस्तारवादी नहीं, निषादराज गुह्य भी उनका पड़ोसी राजा निष्कंटक राज्य करता है। राम जातिवादी नहीं, वह चित्रकूट के कोल–किरातों से भी अपनापन दिखाते हैं। राम अहंकारी नहीं, वह समुद्र को भी क्षमादान देते हैं।

दूसरे शब्दों में कहें तो राम भारतीय संस्कृति और मनीषा की आत्मा हैं। राम अलौकिक हैं, इसलिए पहले माता कौशल्या को ईश्वरीय रूप का दर्शन कराते हैं। राम लौकिक हैं इसीलिए युगानुकूल मानवीय मर्यादा का पालन करते हैं। राम सत्यप्रिय हैं, वह पिता का वचन झूठा नहीं होने देते हैं। राम अनुशासनप्रिय हैं, वह माता कैकेई की भावना का सम्मान करते हैं। राम भावप्रिय हैं, वह शबरी के जूठे बेर खाते हैं। राम न्यायप्रिय हैं, वह सुग्रीव को अपनाते हैं। राम समदर्शी हैं, वह किसी से भेदभाव नहीं रखते हैं। राम ईश्वर हैं, यह उनके संपूर्ण आचरण से स्पष्ट है। राम आदि हैं। राम अंत हैं। राम अनंत हैं।

सर्वविदित है कि रामकथा के पहले गायक वाल्मीकि ने उन्हें– ''रामो विग्रहवान् धर्मः'' कहा है। अर्थात राम धर्म हैं और धर्म ही राम। तब इसके आगे कहने को बचता क्या है।

जब राम स्वयं धर्म हैं या धर्म का अवतार हैं तो धर्म की और कौन सी व्याख्या प्रासंगिक हो सकती है। रामकथा में प्रसंग है कि ऋषि विश्वामित्र ने यज्ञ करना चाहा तो राक्षसों से यज्ञ की रक्षा के लिए महाराज दशरथ के पास जाकर उनकी सेना नहीं मांगी। केवल राम को मांगा। महाराज दशरथ चकित हुए। तब विश्वामित्र उन्हें समझाते हैं— यौवनं धन संपत्तिरू प्रभुमविवेकत्, एकैकमप्यन्थाय किमुयत्र चतुष्टयम्।" अर्थात यौवन, धन, संपत्ति व प्रभुत्व, इन चारों में से किसी एक के भी आ जाने पर मनुष्य अहंकारी हो जाता हैं और जब चारों एक साथ हों तो तब तो कहना ही कठिन। किन्तु हे राजन, आपके पुत्र के पास ये चारों हैं फिर भी वह अतिविनम्र है। इसीलिए मैं आपके पुत्र राम को ले जाना चाहता हूं।

राम के अपने जीवन चरित्र से सर्वश्रेष्ठता के अनुकरणीय उदाहरण मिलते हैं। हर युग हर काल खण्ड में राम से श्रेष्ठ कोई साबित नहीं हुआ है और इसीलिए राम समाज के लिए बारंबार अपरिहार्य हैं। राम को अपनाने वाले तो धन्य होते ही हैं लेकिन राम ने उनकी भी उपेक्षा नहीं की जो उनके प्रतिपक्ष में रहे हैं। राम आदर्शों के ही नहीं, राजनीति के भी शलाका पुरुष हैं।

महर्षि वाल्मीकि जब किसी चरित्र पर लिखने को आतुर हुए थे तो उनका वह पात्र कौन हो सकता है? चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः" जीवन में चरित्र से युक्त कौन है जिसकी सभी प्राणियों के कल्याण में रुचि हो। जो देखने में सुखद और प्रियदर्शी हो। तब देवर्षि नारद ने राम का नाम सुझाया था। कहा था कि आप जिसमें यह सारे सद्गुण ढूंढ़ रहे हैं, वह केवल और केवल राम में ही हैं। राम से आदर्श और श्रेष्ठ चरित्र किसी और का नहीं है। राम साक्षात् धर्म हैं। राम जो कहते हैं जो करते हैं, वह धर्म हो जाता है। मन, वचन और कर्म से राम जो भी करते हैं, उससे धर्म की व्याख्या होती है।

राम सर्वाधिक लोकप्रिय राजा हैं। राम भ्रातृप्रेम के प्रतीक हैं। एक तरफ वह भरत उदात्त ज्ञान देते हैं तो दूसरी

तरफ लक्ष्मण से वियोग में रोते भी हैं। राम संवेदनशील पति हैं जो पत्नी के लिए लाख जतन करते हैं। राम विरही भी दिखते हैं तो साधारण मनुष्य की तरह वन वन भटकते फिरते हैं। राम विनयशील हैं तो प्रचंड पराक्रमी शत्रु भी। राम जब मनुष्य दिखते हैं तो केवट के मन की बात समझ लेते हैं किन्तु जब ईश्वर दिखते हैं तो अहिल्या, जटायु और बालि को भवसागर से पार भी उतारते हैं। साबित है कि राम नर भी हैं और नारायण भी।

अपने इन्हीं समस्त गुणों के चलते वह लोक की आत्मा में समाए हुए हैं। वह नरोत्तम ही नहीं, धीरोदात नायक भी हैं।

राम ने लंका तो जीत ली लेकिन लक्ष्मण के प्रश्न पर स्वयं कहते हैं कि– ''यद्यपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।'' वह विभीषण को लंका सौंप देते हैं और अपनी मातृभूमि को ही सर्वश्रेष्ठ बताते हैं। राम मर्यादा का अतिक्रमण नहीं करते। रक्ष संस्कृति की राजधानी लंका को यथावत रहने देते हैं। उस पर देव और मानव संस्कृति का आवरण नहीं डालते हैं। राम सत्य और धर्म की स्थापना तो करते हैं लेकिन प्रतिपक्षी की मनोदशा का भी ध्यान रखते हैं। उसके अहंकार को तो मिट्टी में मिला देते हैं लेकिन उसकी संस्कृति का समूल नाश नहीं करते हैं। यानी राम दूसरी विचारधारा का भी सम्मान करते हैं।

राम से बड़ा यायावर तो इस धरती पर कोई हुआ ही नहीं लेकिन वह अपनी यायावरी से बहुत कुछ सीखते सिखाते हैं, किसी को अनायास आतंकित नहीं करते हैं। वह प्रतिपक्षी का मन बदलना चाहते हैं किन्तु वास्तविकता के साथ, न कि मन में कुछ छिपाकर। राम ने शत्रु से भी कुछ छिपाया नहीं है। लंकापति के गुप्तचरों को अपना पूरा शिविर दिखाया

ऐसा इसलिए कि उनके पास ''सौरज धीरज बल रथ चाका। धर्म शील दृढ़ ध्वजा पताका'' जैसे अस्त्र–शस्त्र थे। धर्म की स्थापना के लिए राम पाखंड का उपयोग नहीं करते हैं। सत्य की प्रतिष्ठा के लिए राम झूठ का अवलंबन नहीं करते हैं। राम की वैश्विक स्थापना के लिए उनका आचरण ही आकाशदीप है, आज के सोशल मीडिया की जर्जर नौका पर सवार नायक नहीं हैं राम।

लंका विजय के बाद वानर भालुओं को भी राम वास्तविक सम्मान देते हैं, उसका दिखावा नहीं करते हैं। दिखावा एक छलावा है, राम यह बखूबी जानते हैं इसीलिए कहते हैं– ''निर्मल मन जन सो मोहिं पावा। मोहिं कपट छल छिद्र न भावा।'' सहयोगियों, सहकारियों और सहधर्मियों के लिए मन में कपट नहीं रखते हैं राम।

राम को मानने, उनके आचरण को जीवन में उतारने का दावा करने वाले लोकनायकों को राम से सीखने की जरूरत है, न कि छल–कपट से भरे प्रदर्शन करने की। राम लोक के लिए उदात्त महानायक हैं, जाति–वर्ग के नेता नहीं। विजय पर भी राम में अहंकार का लेशमात्र नहीं लेकिन अब के नायक अहंकार में आकंठ डूबे हैं या नहीं, यह आत्मावलोकन उन्हें स्वयं करना चाहिए। ''दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काउहिं ब्यापा।।'' जैसा अनुपम उदाहरण बनने के लिए राम का आचरण जीवन में उतारना होगा, झूठ–मूठ के लिए मन नहीं बहलाने से कुछ नहीं होगा। मन का दीप प्रज्ज्वलित कीजिए तभी भीतर का अंधेरा छंटेगा और फिर समस्त चराचर जगत जगमगा उठेगा। तुलसी बाबा की बात इस दौर में कितनी प्रासंगिक है –

राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरीं द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरेहुं जौं चाहसि उजियार।।

मो. : 9415225285

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

–प्रदीप उपाध्याय

देश के प्रमुख राज्यों में शुमार उत्तर प्रदेश ने राजनीतिक दृष्टि से भले ही अग्रणी राज्य की भूमिका अदा की हो किंतु उद्योग धंधों के लिहाज से यह प्रदेश पिछड़ा ही रहा। बीसवीं शताब्दी में जब 15 अगस्त 1947 को देश ने आजादी हासिल की तब पहले संयुक्त प्रांत और बाद में उत्तर प्रदेश के रूप में जाना जाने वाला यह प्रदेश विगत कई दशकों तक औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा ही रहा। हिन्दी पट्टी के बीमारू राज्यों में उत्तर प्रदेश की पहचान कई दशकों तक चस्पा रही। कांग्रेसी शासन काल के दौरान जब गुजरात और महाराष्ट्र सरीखे राज्य औद्योगिक विकास की नित नयी पटकथा लिख रहे थे तब उस दौर में उत्तर प्रदेश देश को सर्वाधिक प्रधानमंत्री देने वाला राज्य बनकर ही खुश और संतुष्ट नज़र आ रहा था। पंडित जवाहर लाल नेहरू , लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी, चौधरी चरण सिंह, राजीव गांधी, वी.पी. सिंह, चंद्रशेखर, अटल बिहारी वाजपेयी और नरेन्द्र मोदी सरीखे लोकप्रिय नेताओं ने विविध काल खंडों में प्रधानमंत्री के रूप में देश की सत्ता संभाली। इन सभी नेताओं का उत्तर प्रदेश से करीबी रिश्ता रहा। नरेन्द्र मोदी भले ही गुजरात से आते हों किंतु उत्तर प्रदेश का वाराणसी संसदीय क्षेत्र उनका अपना क्षेत्र माना जा सकता है। यहीं से संसद भवन पहुंचकर वे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री बने और लगातार तीसरी बार उनके नेतृत्व में केंद्र में राजग की सरकार बनी है।

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो को अभूतपूर्व सफलता हासिल हुई है। प्रदेश सरकार को दस हजार करोड़ के नए आर्डर मिले हैं। एमएसएमई मंत्री राकेश सचान के अनुसार वर्ष 2023 के मुकाबले इस बार दुगने लोग आए। इस बार तकरीबन ढाई हजार स्टाल लगाए गए थे। सत्तर देशों से आए प्रतिनिधियों ने इस भव्य आयोजन में हिस्सा लिया।

बीसवीं शताब्दी के दरम्यान उत्तर प्रदेश आर्थिक और औद्योगिक लिहाज से एक पिछड़ा हुआ इलाका माना जाता था। अकेला कानपुर शहर ऐसा था जिसकी पहचान औद्योगिक नगरी के रूप में थी। यह पूरब का मैनचेस्टर कहलाता था। आजादी की लड़ाई के दौरान प्रयागराज और वाराणसी ऐसे शहर थे जो राजनीतिक दृष्टि से बेहद सचेत और संवेदनशील माने जाते थे। तब लखनऊ अवध की नज़ाकत और नफासत को लपेटे हुआ था। पूर्वी उत्तर प्रदेश के अधिकांश जिले और समूचा बिहार लेबर बेल्ट के रूप मे जाना जाता था। यहां से हजारों नहीं बल्कि लाखों नौजवान रोज़गार और काम धंधे की तलाश में मुम्बई, कोलकाता, अहमदाबाद, सूरत, लुधियाना, जालंधर और नयी दिल्ली सरीखे बड़े शहरों की ओर रुख़ कर रहे थे। यही हाल बुंदेलखंड, बघेलखंड और उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों का था। ज़ाहिर है उत्तर प्रदेश का पर्वतीय क्षेत्र अब उत्तराखंड के नाम से अलग राज्य बन गया है। पलायन का यह दौर थमा नहीं है लेकिन इसकी रफ्तार जरूर कम हुई है। उत्तर प्रदेश ने तेज़ी के साथ आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाए हैं। ग्रेटर नोएडा नए औद्योगिक क्षेत्र के रूप में अपनी

पहचान स्थापित करने में कामयाब हुआ है। मुरादाबाद का पीतल उद्योग, अलीगढ़ का ताला उद्योग, लखनऊ का चिकन उद्योग, मिर्जापुर और भदोही का कालीन उद्योग, बनारसी साड़ियों का कारोबार, पाटरी तथा हथकरघा उद्योग सालों से अपनी अलग पहचान कायम रखे हुए हैं। इनके कारोबार में लगातार बढ़ावा हो रहा है। इस बीच प्रदेश सरकार ने जो एक जिला एक उत्पाद योजना अर्थात ओडीओपी शुरू की उसने भी प्रदेश में अच्छा खासा माहौल बनाया है। बुनियादी अवस्थापना सुविधाओं का लगातार विस्तार, सुगम यातायात, भरपूर बिजली, इन्वेस्टमेंट फ्रेंडली माहौल तथा कानून व्यवस्था में आवश्यक सुधार ने एक नए उत्तर प्रदेश की छवि देशवासियों के समक्ष प्रस्तुत की है। यह निवेशकों, उद्यमियों, देसी–विदेशी कम्पनियों सबको लुभा रही है। इसकी एक झलक विगत दिनों सम्पन्न हुए यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो के दौरान देखने को मिली। पांच दिनों तक चलने वाले इस ट्रेड शो में पांच लाख से अधिक लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज़ कराई। यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो का आयोजन गत 25 से 29 सितम्बर तक इंडिया एक्सपो मार्ट में किया गया। इस बार ट्रेड शो में बीटू बी और बीटू सी के माध्यम से तकरीबन ढाई लाख से ज़्यादा दर्शक शामिल हुए।

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो को अभूतपूर्व सफलता हासिल हुई है। प्रदेश सरकार को दस हजार करोड़ के नए आर्डर मिले हैं। एमएसएमई मंत्री राकेश सचान के अनुसार वर्ष 2023 के मुकाबले इस बार दुगने लोग आए। इस बार तकरीबन ढाई हजार स्टाल लगाए गए थे। सत्तर देशों से आए प्रतिनिधियों ने इस भव्य आयोजन में हिस्सा लिया। प्रदेश की राजधानी लखनऊ में मीडियाकर्मियों को संबोधित करते हुए श्री सचान ने बताया कि ट्रेड शो के दौरान हजारों करोड़ के आर्डर मिले या फिर उस बाबत पूछताछ हुई। उन्होंने जानकारी दी कि इस आयोजन से उत्साहित होकर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने मंडल एवं जिला स्तर पर ऐसे आयोजन करने का फैसला किया है। ज़ाहिर है इससे प्रदेश में व्यापक माहौल बनेगा और नयी औद्योगिक संस्कृति का विकास होगा। राकेश सचान ने यह भी बताया कि पांच सौ विदेशी खरीददार आए। उन्होंने यहां के शिल्पियों से मुलाकात करके कारोबार के विविध पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो के दौरान उत्तर प्रदेश की भव्य अंदाज में शो केसिंग की गयी। विगत सात वर्षों के दौरान योगी सरकार की दूरंदेशी के चलते राज्य को लेकर लोगों का नज़रिया तेज़ी के साथ बदला है। उत्तर प्रदेश में आर्थिक पिछड़ापन, जातिवाद, भाई भतीजावाद, माफिया तत्वों का बोलबाला था। राजनीति का अपराधीकरण, स्थानीय राजनीति की आपसी लाग डांट, श्रमिक संगठनों का बोलबाला, कच्चे माल की कमी, बेलगाम अफसरशाही तथा सड़कों का अविकसित होना दुरूह समस्यायें थीं जिनकी वजह से विदेशी तो क्या देश के जाने माने उद्योगपति भी यूपी में अपना धंधा लगाने से हिचकते थे। अब ऐसे हालात नहीं हैं।

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी की शुरुआत की। इस आयोजन में न सिर्फ देश के अग्रणी उद्योगपतियों ने भरपूर उत्साह के साथ हिस्सा लिया बल्कि उत्तर प्रदेश के विकास में भागीदार बनने का संकल्प जताया। इसके परिणाम स्वरूप उत्तर प्रदेश की तस्वीर तेज़ी के साथ बदल रही है। वाराणसी, गोरखपुर, नोएडा, कानपुर, मेरठ, आगरा, मुरादाबाद, इलाहाबाद जैसे बड़े शहरों में ही नहीं बल्कि तमाम छोटे जिलों में भी नए उद्योग धंधे लग रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में वाइब्रेंट गुजरात का नारा दिया था। उनके शासन काल के दौरान गुजरात ने अभूतपूर्व गति के साथ विकास किया था। जब नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने विभिन्न राज्यों को वाइब्रेंट गुजरात का मॉडल अपनाने की सलाह दी। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी की शुरुआत की। इस आयोजन में न सिर्फ देश के अग्रणी उद्योगपतियों ने भरपूर उत्साह के साथ हिस्सा लिया बल्कि उत्तर प्रदेश के विकास में भागीदार बनने का संकल्प जताया। इसके परिणाम स्वरूप उत्तर प्रदेश की तस्वीर तेज़ी के साथ बदल रही है। वाराणसी,

गोरखपुर, नोएडा, कानपुर, मेरठ, आगरा, मुरादाबाद, इलाहाबाद जैसे बड़े शहरों में ही नहीं बल्कि तमाम छोटे जिलों में भी नए उद्योग धंधे लग रहे हैं। उद्यमिता को लेकर लोगों का नज़रिया बदल रहा है। मेक इन इंडिया, कौशल विकास मिशन, मुद्रा लोन योजना, स्टार्ट अप, आत्म निर्भर भारत आदि केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं ने उत्तर प्रदेश की प्रगति को नए पंख दिए हैं। यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो इसी दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण सकारात्मक कदम है। गौरतलब है कि आगरा, वाराणसी और लखनऊ जैसे प्रदेश के प्रमुख शहरों में यूनिटी माल बन रहे हैं। हर मुख्यालय से प्रोडक्ट को शो केस करने की जरूरत है।

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो के दौरान रक्षा, कृषि, उद्योग, ई कामर्स, आईटी, टेक्सटाइल, हैंडलूम, बैंकिंग, डेयरी उद्योग और जीआई उत्पादों को विभिन्न स्टालों पर प्रदर्शित किया गया। इसने निवेशकों और उद्योगपतियों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। अब ये उत्तर प्रदेश की ओर जल्द ही रुख करने वाले हैं। इससे न सिर्फ बड़े उद्योगपतियों बल्कि छोटे और मझोले उद्यमियों के लिए संभावनाओं के नए द्वार खुले हैं। यह ट्रेड शो दुनिया भर के निवेशकों, निर्माताओं और ग्राहकों को एक साथ लाकर उत्तर प्रदेश के एमएसएमई सेक्टर को नयी ऊंचाइयों तक ले जाने में सहायक सिद्ध हुआ है। इसने प्रदेश के युवाओं और महिला उद्यमियों के बीच यह भरोसा जगाया है कि वे अपने नए स्टार्ट अप प्रदेश के किसी शहर में स्थापित कर सकते हैं। इससे न सिर्फ उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा बल्कि बेरोजगारी दूर हो सकेगी। प्रदेश के हजारों युवा न सिर्फ सरकारी नौकरियों के मोहपाश में जकड़ने से बचेंगे बल्कि बेंगलुरु, पुणे, हैदराबाद, मुम्बई, अहमदाबाद जैसे शहरों की ओर पलायन करने से बचेंगे। यह क्षेत्रीय स्तर पर स्व रोजगार के नए मौके उपलब्ध कराएगा। जो युवा काम की तलाश में पलायन को मजबूर थे वे खुद को इतना सक्षम बनाएंगे कि अपने स्टार्ट अप में सैकड़ों नए लोगों को काम करने के अवसर प्रदान कर सकेंगे। वह दिन दूर नहीं जब आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश अपने विकास की नयी यशगाथा रच रहा होगा। वह तरक्की के नित नए प्रतिमान गढ़ रहा होगा। ◆

मो. : 9695232888

यूपी बना ड्रीम डेस्टिनेशन

—डॉ. सुयश मिश्रा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में औद्योगिक विकास की नई लहर दौड़ पड़ी है। सिंगल विंडो सिस्टम, सब्सिडी और अब इंसेंटिव ने उद्योगों में नई जान फूँकने का काम किया है। जहां मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की नीतियों ने राज्य को निवेश का हॉटस्पॉट बना दिया है। वहीं बेहतर कनेक्टिविटी, सुदृढ़ कानून व्यवस्था और जीरो टॉलरेंस नीति ने निवेशकों के लिए प्रदेश के दरवाज़े खोल दिए हैं। विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं ने न केवल उद्योगों को पुनर्जीवित किया है, बल्कि राज्य की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत किया है। हाल ही में लोकभवन में आयोजित कार्यक्रम में 1,333 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि का वितरण और 4,800 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्तावों ने यह साबित कर दिया है कि उत्तर प्रदेश अब उद्योगों के लिए 'ड्रीम डेस्टिनेशन' बन चुका है।

योगी आदित्यनाथ की अगुवाई में उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य के औद्योगिक विकास को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने में सफलता प्राप्त की है। नीतिगत सुधारों और नवीनतम प्रयासों ने न केवल यूपी के उद्योगों का वैश्विक स्तर पर विस्तार किया है, बल्कि देश–विदेश के प्रमुख निवेशकों और व्यापारियों को भी यहां व्यापार करने के लिए प्रेरित किया है। जीरो टॉलरेंस नीति के तहत भ्रष्टाचार और अपराध पर कड़ा नियंत्रण रखते हुए, सरकार ने प्रदेश में निवेश के लिए एक अनुकूल

क्या कहते हैं अधिकारी

प्रमुख सचिव औद्योगिक विकास अनिल सागर ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा औद्योगिक निवेश और विकास को प्रोत्साहित करने के लिए लगातार प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। राज्य में निवेशकों को आकर्षित करने के लिए उद्यमी–अनुकूल नीतियाँ बनाई गई हैं और सरकार ने निवेश को धरातल पर उतारने के लिए कई योजनाएं लागू की हैं। उन्होंने यह भी कहा कि प्रदेश का इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर हो रहा है, जिससे उद्योगों के लिए एक मजबूत आधार तैयार हो रहा है। वहीं विशेष सचिव पीयूष वर्मा ने कहा कि प्रदेश में निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण है और सरकार निवेश के हर स्तर पर उन्हें सहयोग प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में उद्यमियों की समस्याओं के समाधान के लिए कई सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं, जिससे निवेश प्रक्रियाओं को सुगम बनाया जा सके। पीयूष वर्मा ने यह भी कहा कि सरकार की प्राथमिकता निवेशकों को भरोसा दिलाना और राज्य के आर्थिक विकास को गति देना है, जिससे उत्तर प्रदेश को एक प्रमुख औद्योगिक हब के रूप में स्थापित किया जा सके।

प्रक्रिया के चलते व्यपारियों का आकर्षण भी यूपी में बढ़ा है। एक व्यापारी ने कहा कि पहले निवेश को लेकर जो असुरक्षा थी, वह अब दूर हो चुकी है और सरकार की ईज ऑफ डूइंग बिजनेस नीतियों से व्यापारियों को काफी राहत मिली है। वहीं एक अन्य व्यापारी ने कहा कि सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति से भ्रष्टाचार और अपराध पर अंकुश लगा है, जिससे व्यापारियों का विश्वास बढ़ा है। इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार और औद्योगिक विकास की गति ने उत्तर प्रदेश को निवेश का एक आकर्षक गंतव्य बना दिया है, और वे आने वाले समय में प्रदेश में और अधिक निवेश करने के इच्छुक हैं। व्यापारी औद्योगिक क्षेत्र में नई योजनाओं, खासकर उन नीतियों की जो स्टार्टअप्स और नए उद्योगों के लिए लाभकारी साबित हो रही हैं उससे खुश हैं।

सिंगल विंडो सिस्टम की भूमिका

प्रदेश में निवेश को सुगम बनाने के लिए सिंगल विंडो सिस्टम का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। यह प्रणाली राज्य सरकार की ओर से औद्योगिक विकास के लिए लाए गए सुधारों में से एक महत्वपूर्ण कदम है। इस व्यवस्था के तहत उद्यमियों को राज्य में उद्योग स्थापित करने के लिए आवश्यक सभी अनुमतियों और मंजूरियों को एक ही प्लेटफार्म से प्राप्त किया जा सकता है। इससे न केवल निवेश की प्रक्रिया में तेज़ी आई है, बल्कि निवेशकों को लालफीताशाही से भी राहत मिली है।

माहौल तैयार किया है, जिससे उत्तर प्रदेश भारत के औद्योगिक मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभर रहा है। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में करोड़ों रुपये के निवेश प्रस्तावों और सरकार द्वारा उद्योगों को दी जा रही विभिन्न सुविधाओं ने राज्य में औद्योगिक विकास की गति को तेज़ किया है। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने औद्योगिक नीति के तहत 'सिंगल विंडो सिस्टम' की शुरुआत की, जिससे उद्यमियों के लिए कागज़ी कार्यवाही को सरल बना दिया गया है। यह नीति उद्यमियों के लिए बेहद लाभकारी सिद्ध हुई है, क्योंकि इससे उन्हें विभिन्न सरकारी विभागों के चक्कर नहीं काटने पड़ते। इसके साथ ही सरकार द्वारा दी जा रही सब्सिडी और विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं ने उद्योगों में नई ऊर्जा का संचार किया है। इन योजनाओं के चलते देश और विदेश के उद्योगपतियों ने प्रदेश में निवेश करने में रुचि दिखाई है।

औद्योगिक नीतियों में लगातार पारदर्शिता और सरल

प्रोत्साहन राशि और निवेश का विस्तार

हाल ही में लखनऊ के लोकभवन में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश के 32 औद्योगिक इकाइयों को 1,333 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि वितरित की। इसके साथ ही 11 अन्य औद्योगिक इकाइयों को 4,884 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश हेतु लेटर ऑफ कम्फर्ट प्रदान किया गया। यह प्रोत्साहन राशि उद्यमियों के लिए प्रदेश में उद्योग लगाने और रोज़गार सृजन करने के लिए विशेष रूप से सहायक सिद्ध हो रही है।

यूपी की बदली तस्वीर

2017 से पहले उत्तर प्रदेश में उद्योग स्थापित करना बेहद कठिन था। राज्य में अपराध की बढ़ती घटनाओं और अराजक माहौल के कारण निवेशक यहां निवेश करने से हिचकते थे।योगी आदित्यनाथ सरकार की सोच और नीतियों में आए बदलाव के कारण अब प्रदेश में निवेशकों के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक कार्यक्रम में इस बदलाव को अपनी सरकार की नीति और अपराध पर कड़ी कार्रवाई का परिणाम बताया था।

प्रदेश में निवेश की बाढ़

फरवरी 2023 में आयोजित 'ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट' के दौरान उत्तर प्रदेश को 40 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। इनमें से 10 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव 'ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी' के माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा धरातल पर उतारे गए। इस निवेश के माध्यम से राज्य में कई नई औद्योगिक इकाइयां स्थापित की जा रही हैं, जो न केवल प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में मदद कर रही हैं, बल्कि रोज़गार के नए अवसर भी उत्पन्न कर रही हैं।

उद्योगों के लिए बेहतर कनेक्टिविटी और इंफ्रास्ट्रक्चर

उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने केवल नीतिगत सुधार ही नहीं किए, बल्कि प्रदेश में आधारभूत ढांचे को भी मजबूत किया है। एक्सप्रेसवे, हाईवे, हवाई अड्डों और जलमार्गों के विस्तार के साथ–साथ राज्य में औद्योगिक पार्कों और डिफेंस कॉरिडोर का विकास किया गया है। यह सभी परियोजनाएं राज्य के उद्योगों को बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान कर रही हैं, जिससे उद्योगों का विकास तेज़ी से हो रहा है।

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में सुधार

योगी सरकार के कार्यकाल में 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' (व्यवसाय में सुगमता) के क्षेत्र में भी सुधार हुआ है। राज्य सरकार ने निवेश मित्र, निवेश सारथी और उद्यमी मित्र जैसी सेवाओं की शुरुआत की है, जिससे प्रदेश में निवेश प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाया गया है। इन सेवाओं के माध्यम से निवेशकों को अब ऑनलाइन प्लेटफार्म से ही सभी आवश्यक मंजूरियां और सेवाएं प्राप्त हो रही हैं। योगी सरकार द्वारा लागू की गई 27 सेक्टोरियल नीतियों ने प्रदेश में उद्योगों के विकास के लिए एक ठोस आधार प्रदान किया है। इन नीतियों को बनाने के दौरान स्टेकहोल्डर्स से सुझाव लिए गए और उन्हें नीतियों में समाहित किया गया है।

प्रोत्साहन राशि वितरण कार्यक्रम में क्या बोले योगी

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 2017 से पहले उत्तर प्रदेश में अव्यवस्था, अराजकता और अपराध का माहौल था, लेकिन अब प्रदेश में कानून का राज है और निवेश के लिए बेहतर माहौल बन चुका है। उन्होंने बताया कि 2023 में हुए ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में 40 लाख करोड़ रुपए से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 10 लाख करोड़ रुपए से अधिक के निवेश धरातल पर उतर चुके हैं। सीएम योगी ने यह भी बताया कि प्रदेश में 32 औद्योगिक इकाइयों को 1,333 करोड़ रुपए की प्रोत्साहन राशि और 10 औद्योगिक इकाइयों को ₹4,500 करोड़ के निवेश हेतु लेटर ऑफ कम्फर्ट वितरित किया गया। उन्होंने विपक्ष पर कटाक्ष करते हुए कहा कि पहले दंगों और कर्फ्यू के चलते प्रदेश में सुरक्षित माहौल नहीं था, लेकिन अब राज्य में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और ईज ऑफ लिविंग की स्थिति में सुधार हुआ है। योगी आदित्यनाथ ने बताया कि प्रदेश में 27 सेक्टोरियल पॉलिसी लागू हैं और औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए 125 सीएम फेलो तैनात किए गए हैं। इसके साथ ही, उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश अब भारत के विकास के ग्रोथ इंजन के रूप में कार्य कर रहा है, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को पूरा करने में योगदान दे रहा है। कार्यक्रम में प्रमुख सरकारी अधिकारी और निवेशक भी उपस्थित थे।

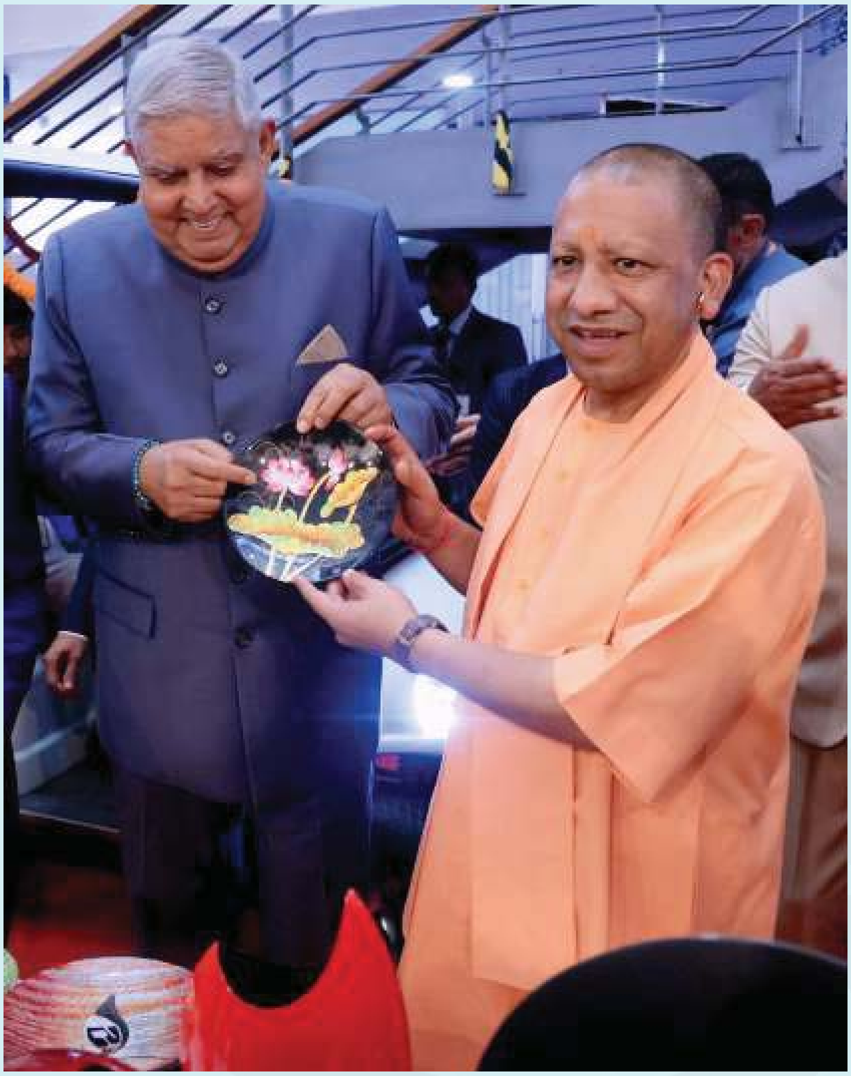

नए औद्योगिक शहर का विकास

योगी आदित्यनाथ सरकार ने झांसी और कानपुर के बीच 36,000 एकड़ भूमि में एक नए औद्योगिक शहर की स्थापना के लिए योजना बनाई है। इस परियोजना को ''बीडा'' (बुंदेलखंड औद्योगिक विकास प्राधिकरण) के नाम से जाना जा रहा है। इसके तहत एक नए औद्योगिक हब का विकास किया जाएगा, जिसमें बड़े उद्योगों के साथ–साथ छोटे और मध्यम उद्योगों को भी बढ़ावा दिया जाएगा। इसके साथ ही, जेवर में बन रहे इंटरनेशनल एयरपोर्ट को भी प्रदेश के औद्योगिक विकास के लिहाज से एक बड़ा कदम माना जा रहा है। बीडा के बसने के साथ ही इस क्षेत्र में एयरपोर्ट की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी।

निवेश और रोजगार की संभावनाएं

उत्तर प्रदेश में औद्योगिक निवेश और रोजगार प्रोत्साहन नीति–2022 के तहत सब्सिडी, एसजीएसटी प्रतिपूर्ति और अन्य वित्तीय प्रोत्साहनों की व्यवस्था की गई है, जिससे उद्योगों के साथ–साथ प्रदेश की आर्थिक प्रगति को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। प्रदेश के विभिन्न जिलों में उद्योगों के लगने से स्थानीय अर्थव्यवस्था में भी अच्छा सुधार देखने को मिला है। योगी आदित्यनाथ की औद्योगिक नीतियों ने उत्तर प्रदेश को निवेशकों के लिए एक ड्रीम डेस्टिनेशन बना दिया है। कानून व्यवस्था में सुधार, बेहतर कनेक्टिविटी, और निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण ने प्रदेश को भारत के प्रमुख औद्योगिक हब के रूप में उभरने में मदद की है। सिंगल विंडो सिस्टम और अन्य नीतिगत सुधारों के माध्यम से निवेश प्रक्रिया को सरल बनाया गया है, जिससे प्रदेश में उद्योगों के विकास की नई राहें खुल रही हैं। ◆

सीएम फेलो और उद्योगों को मिलने वाली सहायता

उद्यमियों की समस्याओं के समाधान के लिए प्रदेश में 125 सीएम फेलो नियुक्त किए गए हैं, जो औद्योगिक विकास विभाग के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। ये फेलो उद्यमियों के सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए राज्य सरकार और उद्यमियों के बीच सेतु का कार्य कर रहे हैं। सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति ने भ्रष्टाचार और अपराध के खिलाफ सख्त रुख अपनाया है। इसका सीधा असर प्रदेश में निवेशकों के विश्वास पर पड़ा है, जिससे प्रदेश में निवेश और उद्योगों का तेजी से विकास हो रहा है। सीएम योगी ने कहा कि सरकार ने निवेशकों से जो भी वादे किए हैं, उन्हें पूरा करने में सरकार कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

मो. : 8924856004

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो में दिखी ब्रांड यूपी की धमक

–सरिता त्रिपाठी

उद्यमियों के महाकुंभ के रूप में उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो (यूपीआइटीएस–2024) के दूसरे संस्करण में ब्रांड यूपी की धमक दिखी। ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में मेगा शो ने अमिट छाप छोड़ी। यूपीआइटीएस 2024 में ओडीओपी, ऊर्जा व नवीकरणीय ऊर्जा समेत 27 सेक्टरों पर खास फोकस रहा। इस वृहद आयोजन के जरिये प्रदेश सरकार ने ब्रांड यूपी को प्रमोट करने के साथ ही निवेश की नई संभावनाएं भी तलाशीं। ट्रेड शो में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में निर्मित उत्पादों को प्रदर्शित किया गया। इस आयोजन के बारे में एमएसएमई, खादी एवं ग्रामोद्योग मंत्री राकेश सचान ने बताया कि यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो विश्वपटल पर ब्रांड यूपी की पहचान बन गया है। आयोजन में 2500 स्टाल्स व प्रदर्शनियों के माध्यम से देश–दुनिया के सामने उत्तर प्रदेश के हुनर को प्रदर्शित किया गया। आयोजन में पांच लाख से अधिक लोगों ने उपस्थिति दर्ज़ कराई। ट्रेड शो में इंडियन काउंसिल फार कल्चरल रिलेशंस के सहयोग से वियतनाम, बोलीविया, रूस, वेनेजुएला, मिस्र व कजाकिस्तान के सांस्कृतिक समूहों द्वारा कार्यक्रम आयोजित किए गए तो यूपी के परंपरागत परिवेश व परिधान को दुनिया के सामने फैशन शो के माध्यम से प्रदर्शित किया जाएगा। इसमें दस हजार करोड़ से अधिक का व्यापार हुआ। वहीं, इस आयोजन में 2500 से अधिक स्टॉल लगाए गए थे। पूरे उत्तर प्रदेश में छोटे से बड़े सभी उत्पादकों को एक ही मंच के पर एक साथ दर्शाया गया। जिससे छोटे–छोटे उद्यमियों को एक बड़ा बाज़ार मिला। दरअसल, ट्रेड शो का आयोजन इंडिया एक्सपो मार्ट में 25 सितंबर से 29 सितंबर तक किया गया. इसमें 70 देशों के 350 बायर्स ने ट्रेड फेयर में रजिस्ट्रेशन कराया। यूपीआईटीएस में खादी के परिधानों का फैशन शो और कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी प्रदर्शन किया गया। पांच दिनों तक यूपी के उद्यमियों के इस महाकुंभ में लगभग साढ़े 5 लाख से अधिक लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर रिकॉर्ड स्थापित किया। पिछले साल 2023 में ट्रेड शो के पहले संस्करण में तीन लाख लोगों ने विजिट किया था। इस बार सिर्फ बी2बी और बी2सी के

माध्यम से 2.60 लाख से ज्यादा विजिटर्स शामिल हुए, जबकि कुल आंकड़ा साढ़े 5 लाख तक पहुंच गया। इसके साथ ही देशी और विदेशी बायर्स से मिले करोड़ों के ऑर्डर्स और बिक्री ने सरकार और उद्यमियों दोनों का उत्साह बढ़ाया। ट्रेड शो ने न सिर्फ उन्हें भविष्य की राह दिखाई, बल्कि यह उनके व्यापार के लिए मील का पत्थर भी साबित हुआ। इंटरनेशनल ट्रेड शो की सफलता से खुश योगी सरकार अब मंडल और जिला स्तर पर भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने पर विचार कर रही है। वहीं अगले वर्ष एक बार फिर 25 से 29 सितंबर को इसके तीसरे संस्करण का आयोजन किया जाएगा।

इस ट्रेड शो ने जिस तरह व्यापक सफलता अर्जित की है, उससे प्रदेश सरकार आने वाले समय में मंडल और जिला स्तर पर भी ऐसे आयोजन करेगी, जिससे छोटा–छोटा कारोबार करने वालों को भी बड़ा बाज़ार मिलने लगेगा। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो के इस दूसरे संस्करण ने नए आयाम स्थापित किए हैं, जिससे प्रदेश के कारोबारियों को नई ऊर्जा मिली है। बड़ी संख्या में आए विजिटर्स दर्शाते हैं कि यह ट्रेड शो न केवल भारत, बल्कि विश्व स्तर पर भी अपनी छाप छोड़ रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस आयोजन के बारे में कहा कि उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक आबादी के साथ एमएसएमई की सर्वाधिक 96 लाख यूनिट भी हैं। कृषि के बाद यह सर्वाधिक रोजगार सृजन करने वाला क्षेत्र है। प्रदेश में सबसे ज्यादा 75 जीआइ टैग हैं। देश के आर्थिक विकास का रास्ता यूपी से होकर गुजरता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नवीनतम तकनीक और उचित प्रोत्साहन नहीं मिलने से हस्तशिल्पियों व कारीगरों के सामने रोजी–रोटी का

संकट पैदा हो गया था। 2017 में भाजपा सरकार आई तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने का अभियान चलाया गया। ओडीओपी के रूप में सभी 75 जनपदों का विशिष्ट उत्पाद तय किया गया। प्रोत्साहन, ब्रांडिंग, मार्केटिंग, डिजाइनिंग, पैकेजिंग, टेक्नोलाजी से जोड़ने का अभियान तेज किया। कोरोना के दौरान अलग–अलग राज्यों में काम करने वाले कामगारों के सामने आजीविका का संकट खड़ा हुआ। उत्तर प्रदेश में 40 लाख नहीं, चार करोड़ लोगों को जगह देने की क्षमता है। प्रदेश में प्रवेश करते ही सभी 40 लाख कामगारों की स्किल मैपिंग कराई गई।

इसके बाद इन लोगों ने प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत की अर्थव्यवस्था को पांच ट्रिलियन डालर बनाने का अभियान चल रहा है। प्रदेश को एक ट्रिलियन डालर की इकोनामी बनाने की दिशा में तेज़ी से काम हो रहा है। सात वर्ष पहले जो प्रदेश देश के विकास का बैरियर माना जाता था, आज यह देश के विकास के ग्रोथ इंजन के रूप में जाना जा रहा है। इसमें एमएसएमई सेक्टर की अहम भूमिका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां पांच दिनों तक होने वाले कार्यक्रम सांस्कृतिक–सामाजिक विविधता के विभिन्न पक्षों को प्रदर्शित करेंगे। प्रदेश के उद्यमियों के लिए अपने उत्पादों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस आयोजन के बारे में कहा कि उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक आबादी के साथ एमएसएमई की सर्वाधिक 96 लाख यूनिट भी हैं। कृषि के बाद यह सर्वाधिक रोजगार सृजन करने वाला क्षेत्र है। प्रदेश में सबसे ज्यादा 75 जीआइ टैग हैं। देश के आर्थिक विकास का रास्ता यूपी से होकर गुजरता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नवीनतम तकनीक और उचित प्रोत्साहन नहीं मिलने से हस्तशिल्पियों व कारीगरों के सामने रोजी–रोटी का संकट पैदा हो गया था। 2017 में भाजपा सरकार आई तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को साकार करने का अभियान चलाया गया।

उन्होंने कहा कि प्रदेश न केवल एमएमएमई का बेहतरीन आधार है, बल्कि बेहतरीन इन्फ्रास्ट्रक्चर भी है। वर्तमान में छह एक्सप्रेस–वे हैं और सात पर काम चल रहा है। प्रदेश में 11 एयरपोर्ट हैं। 10 पर कार्य चल रहा है। चार अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट क्रियाशील हैं। देश के सबसे बड़े नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट को इस वर्ष तक चालू करने का लक्ष्य है। गंगा एक्सप्रेस–वे को प्रयागराज महाकुम्भ–2025 से पहले क्रियाशील करने का प्रयास किया जा रहा है। यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो केवल प्रदर्शनी नहीं है, बल्कि सभी के लिए अवसरों की टोकरी है। निवेश के लिए कानून व्यवस्था से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ नहीं है। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में अब उत्तर प्रदेश तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में 12 नए औद्योगिक क्षेत्र शुरू हुए हैं। विश्व बैंक और आइएमएफ हमारी प्रशंसा कर रहे हैं। मेक इन इंडिया के एक दशक ने विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक परिणाम दिए हैं और यूपी इसमें अग्रणी है। दो साल में हमारी अर्थव्यवस्था जर्मनी और जापान से आगे बढ़कर विश्व में तीसरे नंबर पर पहुंच जाएगी। ◆

मो. : 9415650340

वनटाँगिया : वन से रैम्प तक

–इन्द्रमणि

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, महराजगंज, गोंडा जिलों में वनटांगिया समुदाय की लगभग 60,000 आबादी है, दशकों बुनियादी सुविधाओं से वंचित रहे वनटाँगिया समुदाय के महिलाओं के जीवन में आए बदलाव व सशक्त जीवन का साक्षी बना। 2024 महोत्सव के मंच पर जब महिलायें "कवने दिशा में ले के चला रे बटोहिया" गीत पर मंच पर वाक् करते आयी। उनका आत्मविश्वास देखने लायक था। वन टांगिया महिलायें ग्रामीण संस्कृति ही नहीं अपितु पंजाबी व विदेशी संगितो पर भी जलवा बिखेर रही है। इनका सफर 2023 शुरू हुआ तो अब पीछे मुड़कर नहीं देखी। मसलन अब ताज महोत्सव सहित कई महोत्सवों में भी अपना जलवा बिखेर रही है। जहाँ महिलाओं में नीतू, काजल, सपना, ज्योति रिंकी, दुजी, संगीता जलवे बिखेर रही है वही पुरुषों में विशाल, मोदी, निहाल, राजा भी पीछे नहीं है। बच्चे क्या 75 वर्ष के बूढ़े भी पीछे नहीं है। पर इन सबके पीछे जहाँ सरकार के योजनावो का सहयोग है वही गोरखपुर के माटी की अधिवक्ता जो की अब सुप्रीम कोर्ट में अपनी आवाज ऊँची कर रही है सुगम सिंह शेखावत उनका योगदान कम नहीं है। जिनके योगदान से ये पगडंडियों से रैम्प पर चल रहे हैं।

गोरखपुर के वनटांगिया गांव में रहने वाले जो अब रैम्प पर चल रहे है। उनका कहना है कि हमें तो लगता था कि इसी जंगल में पैदा हुए और यहीं बकरी चराते हुए जीवन खत्म हो जाएगा। ऐसे ही हमारे बच्चे भी इन्हीं जंगलों में रह जाएंगे। सैंकड़ों–हजारों लोगों के सामने स्टेज पर डांस करने या चलने (रैम्प वॉक) का तो कभी ख़याल भी नहीं आया। पिछले करीब सालभर में शहरों में जाकर विभिन्न महोत्सवों और अन्य अवसरों पर प्रस्तुति दी है। पहली बार ट्रेन में बैठे, होटल में रुके, वहां का खाना खाया। अब बच्चों के लिए नए सपने देखने लगे हैं। हालांकि, परिवार को समझाना आज भी चुनौती है।

गोरखपुर के वनटांगिया गांव में रहने वाले जो अब रैम्प पर चल रहे है। उनका कहना है कि हमें तो लगता था कि इसी जंगल में पैदा हुए और यहीं बकरी चराते हुए जीवन खत्म हो जाएगा। ऐसे ही हमारे बच्चे भी इन्हीं जंगलों में रह जाएंगे। सैंकड़ों–हजारों लोगों के सामने स्टेज पर डांस करने या चलने (रैम्प वॉक) का तो कभी ख़याल भी नहीं आया।

वनटांगिया महिलाओं की कला को मंच के रूप में आमदनी का नया ज़रिया मिला है। मेजबान सारी व्यवस्था करते हैं और पारिश्रमिक भी देते हैं। गोरखपुर महोत्सव, आगरा के ताज महोत्सव, वाराणसी में जी–20 व गंगा महोत्सव, मथुरा, महाराजगंज सहित कई जगहों पर प्रशतुती दी। जो दूसरों के खेतों में मजदूरी करने में जीवन गुजर रहे थे। अब उनकी अपनी पहचान बनी है। वनटांगिया महिलाओं को मंच दिलाने में दिल्ली हाईकोर्ट की अधिवक्ता सुगम सिंह शेखावत की भूमिका अहम रही है। वह

कहती हैं, वनटांगिया गांवों में जाकर इन महिलाओं और उनके घरवालों को समझाना मुश्किल था। कोई घूंघट हटाने को तैयार नहीं था। काफी प्रयास के बाद कुछ महिलाएं तैयार हुई हैं। जंगलों में ही उन्हें डांस और रैम्प वॉक की ट्रेनिंग दी गई।

ब्रिटिश शासन के समय रेल की पटरी बिछाने में उपयोग होने वाली लकड़ी की मांग को पूरा करने के लिए साखू के पेड़ लगाने और उनकी देखरेख करने के लिए 1918 में गरीब भूमिहीन मजदूरों को जंगल में बसाया गया। गोरखपुर, गोंडा, महाराजगंज में लगभग 23 वनटांगिया गांव हैं। गोरखपुर के सांसद व अब सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इनकी समस्याओं से बखूबी वाकिफ थे उन्होंने मुख्यमंत्री बनते ही मई, 2018 में वनटांगिया गांवों को राजस्व ग्राम घोषित किया और इन्हें मुख्यधारा से जोड़ने की पहल की। इसके बाद, यहां सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाएं पहुंचनी शुरू हुई हैं।

गोरखपुर, गोंडा, महाराजगंज में लगभग 23 वनटांगिया गांव हैं। गोरखपुर के सांसद व अब सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इनकी समस्याओं से बखूबी वाकिफ थे उन्होंने मुख्यमंत्री बनते ही मई, 2018 में वनटांगिया गांवों को राजस्व ग्राम घोषित किया और इन्हें मुख्यधारा से जोड़ने की पहल की। इसके बाद, यहां सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाएं पहुंचनी शुरू हुई हैं।

पूर्वांचल के इस आदिवासी समुदाय के बारे में कम लोग जानते थे। योगी आदित्यनाथ ने बतौर सीएम इनके गांव में जाना शुरू किया, तो लोग जानने लगे। सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक बदलाव के लिए इंटर–माइग्रेशन ज़रूरी है। मतलब, एक गांव से दूसरे गांव जाना, दूसरे शहर जाना। इसके लिए, कनेक्टीविटी चाहिए। कई जगह इनके गांवों में सड़कें बनी हैं। लेकिन, बहुत जगह अब भी इसकी समस्या है। जब यह काम पूरा हो जाएगा, तो इस समुदाय का अन्य लोगों से संपर्क बढ़ेगा और इनके जीवन में भी व्यावसायिक गतिशीलता आने लगेगी। अब तो मुख्यमंत्री चाहे जितना व्यस्त रहें चाहे जहां रहें, दीपावली तो वन टंगिया के बीच ही मनाते हैं। ◆

मो. : 9415282976

सूर्य के प्रकाश से रौशन करिए अपना घर आँगन

–शिव शंकर गोस्वामी

उत्तर प्रदेश में आजकल प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना को तेजी से लागू किया जा रहा है। इस योजना के तहत योगी सरकार जहां आर्थिक सहायता दे रही है वहीं पर तकनीकी सहयोग भी कर रही है। योजना का उद्देश्य है, कि सामान्य आदमी का बिजली का बिल शून्य हो जाए और उसे निर्वाध गति से चौबीसों घंटे बिजली मिलती रहे। योजना का लाभ व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से उठाया जा सकता है। सामूहिक योजना में फायदा ज्यादा है क्योंकि इसमें प्रति परिवार लागत कम आती है।

क्या है सूर्योदय योजना :–

दरअसल किरणों के माध्यम से सूर्य से आने वाले प्रकाश को जब सौर पैनल के माध्यम से अक्षय ऊर्जा में बदलकर उसका उपयोग अपने घरेलू कामों में करते हैं तो उसे ही सौर ऊर्जा कहते हैं। इस प्रकाश को जिस तकनीक के माध्यम से घरेलू उपयोग में लाया जाता है, वह सौर पैनल कहलाता है। इस सौर पैनल को लोग अपने घर की छत पर ऐसे स्थान पर स्थापित कर सकते हैं जहां पर सूर्य का प्रकाश सीधे पड़ता है। कई देशों और भारत के कई राज्यों में यह विधा प्रचलित है और अब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रयास से यह उत्तर प्रदेश में भी परवान चढ़ने जा रहा है। रूफटॉप सौर पैनल के जरिए तीन प्रकार से बिजली पैदा की जा सकती है। पहला है मोनो क्रिस्टलाइन, ये एक सिंगल सिलिकॉन क्रिस्टल से निर्मित होते है। ये पैनल सबसे शुद्ध और सबसे कुशल माने जाते हैं। दूसरा है पॉली क्रिस्टलाइन, ये सिलिकॉन के कई टुकड़ों से बने होते हैं जिन्हें पिघलाकर वेफर्स में ढाला जाता है, ये पैनल मोनोक्रिस्टलाइन पैनलों की तुलना में सस्ते होते हैं। उनका रंग धब्बेदार नीला दिखाई देता है। और तीसरा है पतली फिल्म, ये कांच, धातु या प्लास्टिक जैसे सब्सट्रेट पर फोटोवोल्टिक सामग्री की एक पतली परत जमा करके बनाया जाता है। इसका ज्ञान लोगों को तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा रूफटॉप पैनल इंस्टॉलेशन के समय ही दिया जाता है। यह तीनों तरीके विशिष्ट बिजली उत्पादन के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं।

सौर ऊर्जा को सूर्य की विद्युत चुंबकीय किरण, प्रकाश ऊष्मा और पराबैंगनी किरणों के रूप में प्राप्त किया जाता है। इस सारे उपक्रम से सूर्य के प्रकाश को तकनीकी माध्यम से प्राप्त करके, उसे घरेलू कामों में ऊर्जा के रूप प्रयोग किया जाता है। इसके लिए जिन उपकरणों की आवश्यकता होती है उसे कुछ रजिस्टर्ड कंपनियां उपलब्ध कराती हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रयास से कई नामी गिरामी कंपनियों ने उत्तर प्रदेश में इस योजना पर काम करने की दिशा में इच्छा जताई है। जिस पर काम भी शुरू हो गया है। अभी इसकी शुरुआत है, लेकिन सरकार की योजना इसे एक आंदोलन के रूप में चलाने की है। इसीलिए सरकार ने

पांच अलग–अलग जोन स्थापित किए हैं, और प्रतिस्पर्धा के आधार पर अलग–अलग नामी गिरामी कंपनियां उस पर काम कर रही हैं।

इस व्यवस्था की शुरुआत होती है छतों के ऊपर सौर पैनल लगाने से, जिसके माध्यम से ऊर्जा का संचय करके उसका उपयोग एसी और डीसी करंट के रूप में किया जाता है। इसके लिए सूर्य की रोशनी को सेमीकंडक्टर की बनी सोलर सेल पर डालकर बिजली पैदा की जाती है। इस बिजली से कई प्रकार के कामों को निष्पादित किया जा सकता है।

उत्तर प्रदेश में सौर ऊर्जा की स्थिति :–

उत्तर प्रदेश में सौर ऊर्जा नीति को 2022 में तब लागू किया गया जब मुख्यमंत्री को लगा कि इससे आम उपभोक्ताओं को सतत एवं सस्ती बिजली दी जा सकती है। उनके नेतृत्व वाली सरकार ने उसी समय सौर ऊर्जा पर एक व्यापक नीति को तैयार किया, जिसका मुख्य उद्देश्य यह था कि 2026–27 तक 22000 मेगावाट गैर पारंपरिक ऊर्जा का उत्पादन करके पारंपरिक ऊर्जा के बोझ को कम किया जाए। मार्च 2022 में ही 30769 मेगावाट क्षमता के प्लांट स्थापित कर दिए गए। जिसमे सबसे बड़ा प्लांट बुंदेलखंड में स्थापित किया गया। आज भारत में सौर ऊर्जा का अग्रणी राज्य है कर्नाटक जहां पर 5000 मेगावाट तक बिजली पैदा होती है। उत्तर प्रदेश में भी इसका विकास तेज़ी से हो इसके लिए राज्य सरकार की ओर से एक से डेढ़ लाख रुपए तक का अनुदान दिया जा रहा है। कम से कम अनुदान 15000 से लेकर 30000 रूपए तक है। सोलर पैनल लगवाने पर इस अनुदान की सीमा 108000 रुपए तक है। सरकार भी अपनी ओर से विभिन्न क्षमताओं वाले सौर पावर प्लांट स्थापित कर रही है।

उत्तर प्रदेश में आजकल प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना को तेज़ी से लागू किया जा रहा है। इस योजना के तहत योगी सरकार जहां आर्थिक सहायता दे रही है वहीं पर तकनीकी सहयोग भी कर रही है। योजना का उद्देश्य है, कि सामान्य आदमी का बिजली का बिल शून्य हो जाए और उसे निर्वाध गति से चौबीसों घंटे बिजली मिलती रहे। योजना का लाभ व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से उठाया जा सकता है। सामूहिक योजना में फायदा ज्यादा है क्योंकि इसमें प्रति परिवार लागत कम आती है।

प्रदेश में ग्रीड संयोजित सोलर पावर जेनरेशन और रूफटॉप पावर जनरेशन की दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है। नवीन ऊर्जा विभाग अभिकरण इस दिशा में काम कर रहा है। वैसे इस अभिकरण के जिम्मे में बायोमास एवं लघु जल विद्युत उत्पादन की योजनाएं पहले से कम कर रही थी, लेकिन अब यह सौर ऊर्जा के विकास की दिशा में तेजी से तत्पर है। विद्युत उत्पादन बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कितने संवेदनशील हैं यह इसी बात से पता चल जाता है कि, चीनी मिलों में बगास (खोई) से और चावल मिलों में धान की भूसी से बिजली बनाने की दिशा में उन्होंने तेजी से काम करने का निर्देश दिया है और इस पर भी तेजी से काम चल रहा है।

आधुनिक सौर ऊर्जा योजना :–

इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसी साल 15 अगस्त को की थी। इसके तहत व्यक्तिगत रूप से रूफटॉप पैनल लगाने के लिए 40 प्रतिशत तक छूट दिए जाने का प्रावधान है। उत्तर प्रदेश में इस योजना का लाभ उठाने के लिए किसानों को कृषि विभाग की वेबसाइट पर जाना पड़ेगा। किसानों को खेतों की सिंचाई के लिए 2, 3, 5, 7.5 और 10 हॉर्स पावर तक के सोलर पंप लगाने के लिए अनुदान दिया जा रहा है। 10 हॉर्स पावर तक का सोलर पंप लगाने का खर्च लगभग 1.73 लाख रूपए आता है, जिस पर राज्य सरकार 53 हजार रुपए का अनुदान दे रही है। घरों पर सोलर रूफटॉप लगाने पर 15 हजार से लेकर ₹50 हजार रुपए का अनुदान देने का प्रावधान है। अनुदान पाने के लिए किसानों को कृषि विभाग के पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य है और विभिन्न क्षमता के प्लांटो पर कितना और कैसे अनुदान मिल सकता है इसे कृषि विभाग की वेबसाइट पर देखा जा सकता है। उत्तर प्रदेश में सौर ऊर्जा उत्पादन दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। वर्तमान समय में कुल 2152

मेगावाट बिजली पैदा हो रही है, जिसमें से सबसे ज्यादा 60 प्रतिशत बुंदेलखंड क्षेत्र में पैदा हो रही है। उत्तर प्रदेश में इसके उत्पादन का भविष्य उज्ज्वल है, सौर ऊर्जा प्लांट लगाने में भारी भरकम सब्सिडी दी जा रही है। 10 किलोवाट तक के सोलर सिस्टम पर 78 हजार रुपए तक छूट मिल रही है। यह छूट केंद्र सरकार दे रही है इसके अतिरिक्त 15 हजार की छूट उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से है। यानी कि दोहरा फायदा।

बताते चले कि आज के समय में पूरी दुनिया में बिजली की मांग दिनों दिन बढ़ती जा रही है और हर जगह पारंपरिक ऊर्जा के स्रोत कम हो रहे हैं। कुछ एक देशों को छोड़कर, हर देश में कोयला या तो समाप्त हो रहा है या उसका खनन बहुत महंगा हो गया है। जल विद्युत की संभावनाएं भी बहुत सीमित हैं, फिर तो एक ही बड़ा विकल्प सौर ऊर्जा ही बचता है। इस स्थिति को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समझ चुके हैं। इसलिए सौर ऊर्जा पर उनका ध्यान सबसे ज्यादा है।

यू.पी.डा. के एक अधिकारी का कहना है की उत्तर प्रदेश में लखनऊ सौर ऊर्जा के मामले में नंबर एक पर है जो दिनों दिन आगे ही बढ़ रहा है। पूरे प्रदेश की बात करें तो उत्तर प्रदेश का स्थान पूरे देश में पांचवा है। इस समय सोलर पावर प्लांट लगवाने का पहला चरण चल रहा है और पहले चरण में 25 लाख घरों की छतों पर छूट के तहत प्लांट लगाए जाने की योजना पर काम चल रहा है।

उत्तर प्रदेश में सौर ऊर्जा उत्पादन दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। वर्तमान समय में कुल 2152 मेगावाट बिजली पैदा हो रही है, जिसमें से सबसे ज्यादा 60 प्रतिशत बुंदेलखंड क्षेत्र में पैदा हो रही है। उत्तर प्रदेश में इसके उत्पादन का भविष्य उज्जवल है, सौर ऊर्जा प्लांट लगाने में भारी भरकम सब्सिडी दी जा रही है। 10 किलोवाट तक के सोलर सिस्टम पर 78 हजार रुपए तक छूट मिल रही है। यह छूट केंद्र सरकार दे रही है इसके अतिरिक्त 15 हजार की छूट उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से है। यानी कि दोहरा फायदा।

इस प्रकार देखा जाए तो निसंदेह कहा जा सकता है कि आने वाले समय में बिजली के भारी भरकम खर्च से आम उपभोक्ताओं को तो राहत मिलेगी ही, साथ ही किसानों के सिंचाई का खर्चा भी बहुत कम हो जाएगा। इससे फसलों की लागत में कमी आएगी और किसानों की आमदनी दुगनी करने की सरकार की जो नीति है उसको बल मिलेगा। इसके अलावा कलकारखानों में भी बिजली की किल्लत दूर होगी। आज स्थिति यह है कि कारखाने अक्सर बिजली कटौती और इसकी आवाजाही की वजह से ठप हो जाया करते हैं, जिससे उत्पादन पर असर पड़ता है और उत्पादन की लागत भी बढ़ जाती है। नतीजा यह होता है की मार्केट प्रतिस्पर्धा में उत्तर प्रदेश के उद्योग ठहर नहीं पाते हैं। अगर सौर ऊर्जा योजना को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सफलतापूर्वक लागू कर दिया तो इससे बहुउद्देशीय मामलों में बिजली की कमी को दूर किया जा सकेगा और उत्तर प्रदेश एक अग्रणी राज्य बन सकेगा। उम्मीद है कि सौर ऊर्जा के मामले में कर्नाटक, गुजरात और महाराष्ट्र की पंक्ति में उत्तर प्रदेश भी खड़ा हो जाए तो कोई ताजुब नहीं। ◆

मो. : 9450420707

प्रदेश में ही बीज उत्पादन की रणनीति तैयार

–जितेन्द्र शुक्ला

केन्द्र और उत्तर प्रदेश की डबल इंजन की सरकार किसानों की आमदनी बढ़ाने और उन्नत पैदावार में वृद्धि को लेकर निरंतर कार्य कर रही है। केन्द्र सरकार ने कृषि सेक्टर में इन सात कार्यक्रमों के लिए 13960 करोड़ रुपए से ज्यादा का आवंटन किया है। दरअसल, किसानों के जीवन को और ज्यादा सुविधाजनक और बेहतर बनाने के लिए और आय में इजाफा करने के लिए सात बड़े फैसले केंद्र सरकार द्वारा लिए हैं। इन फैसलों में प्रमुख है डिजिटल कृषि मिशन जो खेती के लिए डिजिटल सार्वजनिक संरचना की तर्ज पर विकसित किया जा रहा है। बजटीय आवंटन के तहत केन्द्र सरकार ने फसल विज्ञान के लिए 3,979 करोड़ रुपए, पशुधन की बेहतर स्वास्थ्य के लिए 1702 करोड़ रुपए, डिजिटल कृषि मिशन के लिए 2817 करोड़, कृषि शिक्षा और प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए 2291 करोड़, कृषि विज्ञान केंद्रों के लिए 1202 करोड, बागवानी क्षेत्र में बेहतर विकास के लिए 860 करोड़ तथा प्राकृतिक संसाधन के प्रबंधन को मजबूती प्रदान करने के लिए 1115 करोड़ रुपए की योजना को हरी झण्डी दिखायी है। इतना ही नहीं केन्द्र सरकार ने 2047 के लिए किसानों को जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए खाद्य सुरक्षा के लिए तैयार रहने को कहा है।

केन्द्र सरकार की इन योजनाओं का लाभ निश्चित रुप से उत्तर प्रदेश के किसानों को भी मिलेगा। यह सर्वविदित है कि यूपी संभावनाओं वाला प्रदेश है। भारत की आबादी का 16 फीसदी हिस्सा अकेले यूपी में निवास करता है। उत्तर प्रदेश के पास देश की कुल कृषि योग्य भूमि का मात्र 11 फीसदी है, लेकिन देश में कुल खाद्यान्न उत्पादन का 20 फीसदी से अधिक शेयर यूपी का है। प्रदेश के अंदर किसान औद्यानिक फसलों के लिए मात्र 10 फीसदी कृषि योग्य भूमि का ही उपयोग करते हैं, जबकि 10 फीसदी भूमि में कृषि की कुल जीडीपी में 24 फीसदी शेयर औद्यानिक फसलों के माध्यम से किसानों व प्रदेश को प्राप्त होता है। साफ है कि कृषि योग्य भूमि का सर्वाधिक रकबा (166 लाख हेक्टर) उत्तर प्रदेश का है। कृषि योग्य भूमि का 80 फीसद से अधिक रकबा सिंचित है। वहीं, प्रदेश के करीब 3 करोड़ परिवारों की आजीविका कृषि पर निर्भर हैं। उत्तर प्रदेश खाद्यान्न और दूध के उत्पादन में देश में नंबर एक, फलों और फूलों के उत्पादन में दूसरे और तीसरे नंबर पर है।

खेती किसानी के लिए अव्वल तो उपजाऊ भूमि की

आवश्यकता तो होती है ही साथ ही यदि किसानों को उन्नत किस्म के बीज मिल जायें तो सोने पर सुहागा जैसी बात होती है। पूर्व में उत्तर प्रदेश के किसानों को बीज के लिए दूसरे राज्यों पर निर्भर रहना पड़ता था। यानि प्रदेश को कुल उपयोग का करीब आधा हिस्सा दूसरे राज्यों से मांगना पड़ता है। इसके लिए सरकार को हर साल करीब 3000 करोड़ रुपये खर्च करने पड़ते हैं। सभी फसलों के हाइब्रिड बीज तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश से आते हैं। विभागीय आंकड़ों के अनुसार गेहूं के 22 फीसदी, धान के 51 फीसदी, मक्का के 74 फीसदी, जौ के 95 फीसदी, दलहन के 50 फीसदी और तिलहन के 52 फीसदी बीज गैर राज्यों से आते हैं। एक तथ्य यह भी है कि सबसे उर्वर भूमि, सर्वाधिक सिंचित रकबे के बावजूद प्रति हेक्टेयर प्रति कुंतल उपज के मामले में यूपी पीछे था। इसके लिए अन्य वजहों के साथ क्वालिटी के बीजों की अनुपलब्धता भी एक प्रमुख वजह रही है। विभागीय आंकड़ों के अनुसार उत्तर प्रदेश में गेहूं का प्रति हेक्टेयर प्रति कुंतल उत्पादन 26.75 कुंतल है, जबकि पंजाब का सर्वोच्च 40.35 कुंतल है। इसी तरह धान का उत्पादन 37.35 कुंतल है, जबकि हरियाणा का 45.33 कुंतल है। अन्य राज्यों की तुलना में इसी तरह का अंतर चना और सरसों के उत्पादन में भी है। गुणवत्ता के बीज से इस अंतर को 15 से 20 फीसद तक कम किए जाने की पूरी संभावना कृषि विशेषज्ञों ने जता रखी थी।

इसी के मद्देनज़र राज्य की योगी आदित्यनाथ सरकार ने किसानों को प्रदेश के कृषि जलवायु के अनुकूल गुणवत्ता के बीज सुलभ हो सकें इसके लिए बड़े पैमाने पर उत्तर प्रदेश में ही बीज उत्पादन की रणनीति तैयार की है। इससे किसानों के लिए स्थानीय स्तर पर गुणवत्ता के बीज तैयार होने से उनकी उपज और उपज की गुणवत्ता में सुधार भी होगा। यह सर्वविदित है कि बीज की गुणवत्ता पर ही फसल की उपज और गुणवत्ता निर्भर करती है। अगर बीज खराब है तो खेत की तैयारी से लेकर बीज और बुवाई के समय डाली जाने वाली खाद की लागत बर्बाद हो जाती है। साथ ही उत्तर प्रदेश जैसे कृषि प्रधान राज्य के लिए तो बीज की गुणवत्ता और भी मायने रखती है। इसी सोच के चलते योगी सरकार ने बीज उत्पादन की एक व्यापक योजना तैयार की। इसके तहत प्रदेश के नौ कृषि जलवायु क्षेत्रों में होने वाली फसलों के मद्देनज़र पांच बीज पार्क (वेस्टर्न जोन, तराई जोन, सेंट्रल जोन, बुंदेलखंड और ईस्टर्न जोन) पीपीपी मॉडल पर बनाए जाएंगे। हर पार्क का रकबा न्यूनतम 200 हेक्टेयर का होगा। कृषि विभाग के पास बुनियादी सुविधाओं के साथ ऐसे छह फार्म उपलब्ध हैं। इसमें से दो फार्म 200 हेक्टेयर, दो फार्म 200 से 300 और दो फार्म 400 हेक्टर से अधिक के हैं। राज्य सरकार इनको इच्छुक पार्टियों को लीज पर दे सकती है।

योगी आदित्यनाथ सरकार ने किसानों को प्रदेश के कृषि जलवायु के अनुकूल गुणवत्ता के बीज सुलभ हो सकें इसके लिए बड़े पैमाने पर उत्तर प्रदेश में ही बीज उत्पादन की रणनीति तैयार की है। इससे किसानों के लिए स्थानीय स्तर पर गुणवत्ता के बीज तैयार होने से उनकी उपज और उपज की गुणवत्ता में सुधार भी होगा। यह सर्वविदित है कि बीज की गुणवत्ता पर ही फसल की उपज और गुणवत्ता निर्भर करती है। अगर बीज खराब है तो खेत की तैयारी से लेकर बीज और बुवाई के समय डाली जाने वाली खाद की लागत बर्बाद हो जाती है। साथ ही उत्तर प्रदेश जैसे कृषि प्रधान राज्य के लिए तो बीज की गुणवत्ता और भी मायने रखती है।

साफ है कि सीड पार्क बनाने से सालाना करीब तीन हजार करोड़ रुपये की बचत होगी। इसके अलावा प्लांटवार अतिरिक्त निवेश आएगा। प्लांट से लेकर लॉजिस्टिक लोडिंग, अनलोडिंग, परिवहन में स्थानीय स्तर पर लोगों को रोज़गार मिलेगा। सीड रिप्लेसमेंट दर (एसएसआर) में सुधार आएगा, इसका असर उपज पर पड़ेगा।

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार किसानों और खेती के प्रति कितने गंभीर और संवेदनशील है इसका अंदाज़ा सरकार द्वारा इस दिशा में उठाये गए विभिन्न कदमों और निर्णयों से लिया जा सकता है। इसी क्रम में योगी सरकार ने गंगा तटवर्ती इलाकों के किसानों को खेती के लिए प्रेरित

करने के उद्देश्य से विशेष अनुदान की घोषणा भी कर दी है। यह अनुदान उन किसानों को दिया जाएगा जो गंगा के किनारे पांच किलोमीटर के दायरे में रहते हैं और शाक–भाजी की खेती करते हैं। इस योजना के तहत किसानों को प्रति हेक्टेयर 20 हजार रुपये का अनुदान मिलेगा।

इस योजना का लाभ 'पहले आओ, पहले पाओ' की तर्ज़ पर दिया जाएगा। किसानों को आवेदन करने के लिए विभाग की वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन करना होगा। इसके अतिरिक्त किसानों को मुफ्त में पौधे भी प्रदान किए जाएंगे, जिससे वे अपनी फसलों को बेहतर तरीके से उगा सकें। मिर्जापुर जिले के करीब 134 गांव गंगा के तटीय क्षेत्र में आते हैं। मानसून के दौरान जब गंगा का जलस्तर बढ़ता है, तो इन क्षेत्रों में खेती संभव नहीं हो पाती। इसे ध्यान में रखते हुए सरकार ने यह योजना शुरू की है, जिससे बारिश के बाद किसान अपनी खेती फिर से शुरू कर सकें। इस योजना के तहत किसान टमाटर, बैंगन, लौकी, और तरोई जैसी रवि की प्रमुख फसलों की खेती कर सकते हैं। अगर किसान एक्सीलेंस सेंटर से बीज खरीदते हैं, तो उनका पैसा भी वापस मिल जाएगा। इसके अलावा सब्जियों को सुरक्षित रखने के लिए क्रैक्स भी उपलब्ध कराए जाएंगे। सरकार का लक्ष्य है कि लगभग 250 हेक्टेयर में शाक–भाजी की खेती हो, जिससे किसानों की आय में वृद्धि हो सके और उन्हें बेहतर आर्थिक स्थिति प्राप्त हो। यह योजना गंगा तटीय इलाकों में कृषि को पुनर्जीवित करने का एक महत्वपूर्ण कदम है, जो न केवल किसानों की आय में सुधार करेगी बल्कि उन्हें नई तकनीकों और संसाधनों का उपयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित करेगी।

वहीं, योगी सरकार कृषि सेक्टर के कायाकल्प और कृषि आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए 'कृषि विकास एवं ग्रामीण उद्यमिता सुदृढ़ीकरण कार्यक्रम' (यूपी एग्रीस) की शुरुआत करने जा रही है। विश्व बैंक के साथ हुई महत्वपूर्ण बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने साफ कहा कि 187.70 लाख हेक्टेयर से अधिक कृषि भूमि के साथ उत्तर प्रदेश एकमात्र राज्य है, जहां कुल उपलब्ध भूमि के 76 फीसद पर खेती होती है। मैनपावर हो, शुद्ध जल की उपलब्धता या विविध क्लाइमेटिक जोन हो, प्रदेश में हर वह पोटेंशियल है ,जो इसे देश के कृषि सेक्टर का पावर हाउस बनाता है। उन्होंने कहा कि कृषि सेक्टर के कायाकल्प और कृषि आधारित उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य

सरकार 'कृषि विकास एवं ग्रामीण उद्यमिता सुदृढ़ीकरण कार्यक्रम' (यूपी एग्रीस) की शुरुआत करने जा रही है। योजनांतर्गत न केवल फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए नियोजित प्रयास होंगे, बल्कि मूंगफली, मिर्च और हरी मटर जैसी फसलों के क्रॉप क्लस्टर और इनसे जुड़े उद्योगों के नए क्लस्टरों के विकास तथा निर्यात बढ़ोतरी का प्रयास भी होगा। सरकार न केवल किसानों को विभिन्न देशों में भेजकर नई तकनीक का प्रशिक्षण दिलाएगी, बल्कि कृषि सेक्टर का वित्त पोषण भी करेगी।

मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि विश्व बैंक की सहायता से शुरू हो रही यह परियोजना किसान, कृषक उत्पादक संगठन और कृषि उद्यमियों को हरसंभव तकनीकी सहायता तथा इंफ्रास्ट्रक्चर की सुलभता मुहैया कराएगी। हमारे पास सिंचित भूमि का कवरेज भी 86 प्रतिशत से अधिक है। विगत सात वर्षों में नियोजित प्रयासों से प्रदेश में विभिन्न फसलों की उत्पादकता में बढ़ोतरी हुई है, लेकिन अब भी बुंदेलखंड, पूर्वांचल तथा विंध्य क्षेत्र में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश को नौ एग्रो क्लाइमेटिक जोन का लाभ प्राप्त होता रहा है। इस नई परियोजना में इन क्लाइमेटिक जोन के आधार पर फसल उत्पादन और अन्य कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देने की रणनीति अपनाई जानी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि पश्चिमी एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश राज्य की कुल जनसंख्या में 40–40 फीसद की भागीदारी रखते हैं, लेकिन जहां पश्चिमी उत्तर प्रदेश का प्रदेश के कृषि उत्पादन में 50 प्रतिशत का योगदान है, वहीं पूर्वी उत्तर प्रदेश का योगदान मात्र 28 फीसद है। इसी प्रकार, उत्तर प्रदेश की कुल जनसंख्या का 7 फीसद बुंदेलखंड में निवास करता है, जबकि, कृषि उत्पादन में इस क्षेत्र का योगदान मात्र 5.5 प्रतिशत है। जेवर एयरपोर्ट के पास एक्सपोर्ट हब की स्थापना की जाए। कृषि में ऋण प्रवाह को बढ़ाने की आवश्यकता है, साथ ही कृषि एवं प्रसंस्करण में महिला समूहों की भागीदारी भी बढ़ाने के प्रयास होने चाहिए। विश्व बैंक की यह परियोजना छह वर्ष की होगी। करीब 4,000 करोड़ रुपए की इस परियोजना का सीधा लाभ कृषक, कृषक समूहों, मत्स्य पालकों और कृषि सेक्टर से जुड़ी एमएसएमई इकाइयों को होगा। यूपी एग्रीस परियोजना, पूर्वी उत्तर प्रदेश के 21 तथा बुंदेलखंड के 7 जिलों में संचालित की जाएगी। परियोजना के माध्यम से 10 लाख किसानों को प्रत्यक्ष सहायता मिलेगी, इनमें से 30 फीसद महिला किसान होंगी। इसके अतिरिक्त, एक लाख से अधिक मछुआरे परिवारों को सहायता दी जाएगी। 500 किसानों को सर्वोत्तम कृषि तकनीकी देखने के लिए विदेश भ्रमण भी कराया जाएगा। ◆

मो. : 9415158902

अयोध्या के श्रीराम और श्रीराम की अयोध्या

–प्रदीप कुमार गुप्ता

भारत अनेक संस्कृतियों और सभ्यताओं की जन्मस्थली रही है। अत्यन्त प्राचीन काल से ही भारत ने अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मत और मज़हब के अनुयायियों को अपने वात्सल्य से पल्लवित और पुष्पित किया है। विविधताओं के बावजूद भारत एक है और यहां की संस्कृति भारतीयता से ओत–प्रोत है। प्रभु श्रीराम भारतीय संस्कृति के मूल में है। उत्तर प्रदेश को इस बात का गौरव प्राप्त है कि प्रभु श्रीराम का जन्म सप्तपुरियों में से एक अयोध्या नगरी में हुआ। अयोध्या में ही उन्होंने अपनी बाल लीला रची और यहीं से वह माता सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ चौदह वर्षों के वनवास के लिए निकले। अनेक विघ्न बाधाओं को पार करते हुए प्रभु श्री राम अंततः अत्याचारी और अन्यायी रावण का वध कर अयोध्या नगरी लौटे और उन्होंने राम राज्य की स्थापना की। यही राम राज्य सदैव से भारतीय संस्कृति और समाज का पथप्रदर्शक और प्रेरणा स्रोत रहा है।

अयोध्या नगरी ने प्रभु श्रीराम के जीवन के एक–एक पल का अनुभव किया है और उसमें सहभागी रही है। श्रीराम और अयोध्या अलग–अलग नहीं हैं। श्रीराम ही अयोध्या हैं और अयोध्या ही श्रीराम हैं। इसलिए श्रीराम को अयोध्या बहुत प्रिय है। अयोध्या जी में ही प्रभु श्रीराम का हृदय बसता है।

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि, उत्तर दिसी बह सरजू पावनी।
जा मज्जन ते बिनहि प्रयासा, मम समीप नर पावहिं बासा।

श्रीरामचरित मानस में प्रभु श्रीराम कहते हैं कि यह सुहावनी पुरी मेरी जन्मभूमि है। इसके उत्तर दिशा में जीवों को पवित्र करने वाली सरयू नदी बहती है, जिसमें स्नान करने से मनुष्य बिना परिश्रम ही मेरे समीप निवास पा जाते हैं। श्रीराम अयोध्या के साथ ही, अयोध्यावासियों को भी बहुत स्नेह देते हैं। अयोध्या के लोगों पर श्रीराम का विशेष स्नेह और कृपा है।

अति प्रिय मोहि इहां के बासी, मम धामदा पुरी सुखराशि।

यहां के निवासी मुझे बहुत ही प्रिय हैं। यह पुरी सुख की राशि और मेरे परम धाम को देने वाली है। अयोध्या जी

प्रभु श्रीराम के जीवन के सभी प्रसंगों और पलों की साक्षी रही है। श्रीराम के जन्म से वनवास और फिर घर वापसी तक अयोध्या ने श्रीराम के हर सुख–दुःख में साथ दिया है। भगवान श्रीराम बालरूप में अपनी लीलाओं से अयोध्या जी की पावन और पवित्र धरती को आह्लादित करते हैं।

एहि बिधि राम जगत पितु माता, कोसलपुर बासिन्ह सुखदाता।
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी, तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी।

सम्पूर्ण जगत के माता–पिता श्रीरामजी अवधपुर के निवासियों को सुख देते हैं। जिन्होंने श्रीरामचन्द्र जी के चरणों में प्रीति जोड़ी है, उनके प्रेमवश भगवान बाललीला करके उन्हें आनन्द दे रहे हैं। जब श्रीरामचन्द्र जानकी जी के

साथ विवाह कर अयोध्या लौटते हैं, तो यह नगरी उनके स्वागत में प्रफुल्लित होकर उत्सव में डूब जाती है। अनेक प्रकार के मंगल कलश घर–घर सजाकर बनाए जाते हैं। श्री रघुनाथ जी की पुरी अयोध्या को देखकर ब्रह्मा आदि सभी देवता प्रसन्न होकर निहारते रहते हैं। सभी देवतागण श्रीराम के विवाह के साक्षी बनना चाहते हैं। अयोध्या जी इस अवसर पर अत्यन्त मनोहर दृश्यों के साथ शोभायमान हैं।

बिबिध भांति मंगल कलस गृह गृह रचे संवारि।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि।

अयोध्या नगरी ने वह दिन भी देखे जब श्रीराम अयोध्या से वनवास के लिए जा रहे थे। तब अयोध्या जी अनाथ हो रही थी।

चलत रामु लखि अवध अनाथा।
बिकल लोग सब लागे साथा।

अयोध्या जी को अपने प्रिय श्रीराम से बिछुड़ने से बहुत पीड़ा हुई। श्रीराम जी के बिना अयोध्या सूनी सी हो गयी। एक मन्दिर की पूर्णता उसमें प्रतिष्ठित मूर्ति से होती है। इसी तरह श्रीराम अयोध्या नगरी की जाग्रत प्रतिमा हैं। उनके बिना अयोध्या अत्यन्त भयानक लगने लगी थी। अयोध्या बड़ी डरावनी लग रही थी। मानो अंधकारमयी कालरात्रि ही हो। नगर के नर–नारी भयानक जन्तुओं के समान एक–दूसरे को देखकर डर रहे थे।

लागति अवध भयावनि भारी, मानहुं कालराति अंधिआरि।
घोर जन्तु सम पुर नर नारी, डरपहि एकहि एक निहारी।

श्रीराम भी अयोध्या से अलग होकर प्रसन्न नहीं रहे होंगे। उन्हें अपने कुल की मर्यादा और पिता के वचन को निभाने के लिये हंसते–हंसते अयोध्या जी को चौदह वर्षों के लिये त्यागना पड़ा होगा। 14 वर्षों का वनवास श्रीरामचन्द्र जी को मिला था। उनके साथ माता जानकी तथा लक्ष्मण जी ने भी वनवास काटा था। परन्तु सम्पूर्ण अयोध्या नगरी ने भी अपने प्रभु से विरह का वनवास झेला। इस दौरान अयोध्या में सर्वत्र दुःख की छाया व्याप्त थी। राजा दशरथ ने पुत्र वियोग में अपने प्राण ही त्याग दिए थे। भरत जी, श्रीरामचन्द्र जी की खड़ाऊ को सिंहासन पर रखकर अपने प्रभु का इंतजार करते रहे। अयोध्या नगरी के लिए यह वियोग कितना कष्टकर तथा असहनीय रहा होगा, यह कल्पना करना भी असम्भव है।

जब श्रीराम, माता जानकी तथा अनुज लक्ष्मण जी सहित 14 वर्षों का वनवास पूर्ण कर अयोध्या वापस आते हैं, तो अयोध्यावासी उनके घर वापसी की खुशी में पूरी नगरी को अत्यन्त मनोहर रूप से सजाते हैं, दीप जलाते हैं। अयोध्या अपने श्रीराम के आगमन पर अत्यन्त हर्ष से भर गयी। प्रभु को आते जानकर अवधपुरी सम्पूर्ण शोभाओं की खान हो गयी। तीनों प्रकार की सुंदर वायु बहने लगी। सरयू जी अति निर्मल जल वाली हो गयीं।

अवधपुरी प्रभु आवत जानी, भई सकल सोभा कै खानी।
बहइ सुहावन त्रिविध समीरा, भइ सरजू अति निर्मल नीरा।

प्रभु को देखकर अयोध्यावासी हर्षित हो गए। उनके वियोग से उत्पन्न सब दुख नष्ट हो गए। अयोध्यावासियों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। सब खुशी से झूमने और नाचने–गाने लगे। सभी अपने राजा के स्वागत में जुट गये।

प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी, जनित वियोग बिपति सबनासी।

यही स्थिति आज अयोध्या जी के साथ ही, पूरे देश की है। 22 जनवरी, 2024 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा श्रीराम जन्म भूमि मन्दिर में श्रीरामलला की प्राण–प्रतिष्ठा हो गयी है। श्रीरामलला के आगमन से समूचे भारत में, भारतवासियों में और सभी सनातन धर्मावलम्बियों में हर्ष का माहौल है। अपने प्रभु से मिलने को सब उत्साहित और बेचैन हैं। सभी प्रभु श्रीरामलला के दर्शन करके अपने को धन्य करना चाहते हैं। दूसरी ओर अयोध्या जी में आने वाले भक्तों, श्रद्धालुओं तथा आस्थावानों के स्वागत के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने इस नगरी को सजाने और संवारने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। अयोध्या में प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु और भक्त दर्शन करने आ रहे हैं। यह उत्साह, यह उमंग स्वाभाविक भी है। भारतीय संस्कृति के शिखर पर प्रभु श्रीराम विराजमान है और सदैव से इसे दिशा देते रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में अयोध्या नगरी विश्व की सुन्दरतम नगरी के रूप में स्थापित हो रही है।

अयोध्या को सभी दिशाओं से सड़क मार्ग की 04 या 06 लेन की कनेक्टिविटी प्रदान की गयी है। अयोध्या में प्रदेश के चौथे इण्टरनेशनल एयरपोर्ट महर्षि वाल्मीकि अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन प्रधानमंत्री जी ने विगत दिनों किया है। इससे अयोध्या देश व दुनिया से हवाई मार्ग से भी जुड़ गयी है। अयोध्या में सरयू जी में क्रूज का संचालन हो रहा है। सरयू जी को इनलैण्ड वॉटर–वे के रूप में विकसित करने किया जा रहा है। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास कर उसे विश्वस्तरीय स्वरूप प्रदान किया गया है। अयोध्या को जल, थल एवं नभ के साथ ही, रेल मार्ग से भी बेहतरीन कनेक्टिविटी दी जा चुकी है।

अयोध्या को उसका त्रेतायुगीन वैभव वापस दिलाने के साथ ही, आधुनिक सुख–सुविधाओं से युक्त करने के लिए मुख्यमंत्री जी निरन्तर कर्मरत हैं। लम्बे समय तक चले श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन की सुखद परिणति अयोध्या धाम में भव्य, दिव्य तथा नव्य मंदिर के निर्माण में हुयी है। लगभग 500 वर्षों के संघर्ष का सार्थक परिणाम यह हुआ है कि श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में श्रीरामलला के बाल रूप विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा हुई है। इसने भारतवासियों की आस्था को सम्मान दिया है। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर देश व दुनिया के आकर्षण और श्रद्धा का केन्द्र बन गया है।

मुख्यमंत्री जी के प्रगतिशील नेतृत्व और विजन से अयोध्या नगरी विश्व में सामाजिक व सांस्कृतिक समरसता का सर्वश्रेष्ठ व उत्कृष्ट उदाहरण बन गयी है। यह नगरी सनातन धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा के साथ ही, राष्ट्र के गौरव की पुनर्स्थापना भी है। विश्वभर में अब सभी रास्ते श्रीराम नगरी अयोध्या की ओर जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री जी के प्रगतिशील नेतृत्व और विजन से अयोध्या नगरी विश्व में सामाजिक व सांस्कृतिक समरसता का सर्वश्रेष्ठ व उत्कृष्ट उदाहरण बन गयी है। यह नगरी सनातन धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा के साथ ही, राष्ट्र के गौरव की पुनर्स्थापना भी है। विश्वभर में अब सभी रास्ते श्रीराम नगरी अयोध्या की ओर जा रहे हैं। हम परम सौभाग्यशाली हैं कि हमें इस ऐतिहासिक पल का साक्षी बनने का अवसर मिला है। सदियों में एक लम्हा ऐसा आता है, जो आने वाली कई पीढ़ियों को प्रभावित करता है। श्री राम मंदिर निर्माण और श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा ऐसा ही अवसर है, जो न जाने कितनी पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा, उनका मार्गदर्शन करता रहेगा। श्रीराम मंदिर का निर्माण समकालीन इतिहास की ऐसी घटना है, जिसकी पूरे विश्व में अन्यत्र मिसाल मिलना दुर्लभ है। एक ओर जहां विश्व में अनेक देश अन्य देशों पर आधिपत्य कायम करने का प्रयास कर रहे हैं, वहीं भारत में हमारे देश की सबसे बड़ी समस्या का सर्वमान्य समाधान हुआ है। अयोध्या धाम में श्रीराम मंदिर का बनना कोई अचानक होने वाली घटना नहीं है। श्रीराम मंदिर के निर्माण के लिए हमारे संतों, ऋषियों, अनेक रामभक्तों ने वर्षों तपस्या की और अपना बलिदान दिया है।

प्रधानमंत्री जी के विजन को साकार करता हुआ देश समृद्धि के नए आयाम स्थापित कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के विजन को उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी

साकार कर रहे हैं। अयोध्या भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती है। श्री राम और अयोध्या एक दूसरे के पर्याय हैं। पावन सरयू नदी के किनारे बसी अयोध्या नगरी ने एक लंबे समय तक उपेक्षा झेली है। आज उसका गौरव पुनर्स्थापित हुआ है। अयोध्या के सर्वांगीण विकास के लिए 31 हजार करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है। इनमें से अनेक परियोजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं, शेष भी शीघ्र ही पूर्ण हो जाएंगी।

श्रद्धालुओं, भक्तों, आस्थावान यात्रियों और पर्यटकों की सुविधा के लिए अयोध्या नगरी को सजाया और संवारा गया है। अयोध्या में श्रीराम पथ, भक्तिपथ, धर्मपथ, श्रीरामजन्मभूमि पथ, मल्टीलेवल पार्किंग का निर्माण हुआ है। रामजी की पैड़ी के सौन्दर्यीकरण सहित नए घाटों का निर्माण, सूरजकुण्ड एवं भरतकुण्ड का सौन्दर्यीकरण किया गया है। अयोध्या में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन लगातार हो रहा है। इससे यहां का वातावरण राममय हो गया है। श्रीरामलला के विराजमान होने के बाद अयोध्या में पर्यटकों और श्रद्धालुओं का आगमन कई गुना बढ़ गया है।

मुख्यमंत्री जी की पहल से शुरू हुए दीपोत्सव ने अयोध्या नगरी को वैश्विक पहचान दी है। यह कार्यक्रम अयोध्या की ब्राण्डिंग करने वाला इवेन्ट बन गया है। दीपोत्सव का आयोजन सच्चे अर्थों में दीपावली को सम्पूर्णता प्रदान करता है। इससे जुड़ना परम गौरव की अनुभूति कराता है। अयोध्या को देश की पहली सोलर सिटी के रूप में भी विकसित किया जा रहा है। अयोध्या में सभी के लिए असीम सम्भावनाओं के द्वार खुले हैं। यह नगरी आस्था के साथ ही पर्यटन की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण गन्तव्य बन गई है। आध्यात्म, संस्कृति और पर्यटन की त्रिवेणी ने अयोध्या नगरी को सम्भावनाओं से भरपूर बना दिया है।

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर त्याग, मर्यादा, विनम्रता तथा न्याय की प्रेरणा विश्व को देता रहेगा। यह इस बात का भी प्रतीक है कि अन्यायी, अत्याचारी चाहे जितना बड़ा क्यों न हो, चाहे कितना भी शक्तिशाली हो, अन्ततः विजय सत्य और न्याय की ही होती है। तो फिर देर न कीजिए। आप भी चले आइए, अयोध्या नगरी में। प्रभु श्रीरामलला के दर्शन कीजिए और अध्यात्म की पराकाष्ठा को अपने अंतर्मन से महसूस कीजिए। आस्था, विश्वास और धर्म की त्रिवेणी स्वरूप सरयू जी में डुबकी लगाइए और भारतीय संस्कृति के उत्थान तथा अयोध्या जी के विकास के लिए केन्द्र एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किए गये विनम्र प्रयासों का अवलोकन कीजिए और सहभागी बनिये।

प्रभु श्रीराम से यही विनती है कि हमारा भारतवर्ष निरन्तर उन्नति करता रहे। मुख्यमंत्री जी ने उत्तर प्रदेश को आस्था, धर्म, अपनी विरासत के सम्मान के साथ ही, आधुनिक विकास के जिस पथ पर अग्रसर किया है, उसमें प्रदेश में नये मानक गढ़े और नये कीर्तिमान बनाये।

अतुलित भुज प्रताप बल धामः, कलि मल विपुल विभंजन नामः।
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः, संतत शं तनोतु मम रामः।

(जिनकी भुजाओं का प्रताप अतुलनीय है, जो बल के धाम हैं, जिनका नाम कलियुग के बड़े भारी पापों का नाश करने वाला है, जो धर्म के रक्षक हैं और जिनके गुण समूह आनन्द देने वाले हैं, वे श्रीराम जी निरन्तर हम सभी के कल्याण का विस्तार करें।) ◆

मो. : 7705800992

यूपी एग्रीज योजना से समृद्ध होंगे किसान

—डॉ. सौरभ मालवीय

उत्तर प्रदेश में कृषि को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रदेश की योगी आदित्यनाथ की सरकार ने राज्य के किसानों की समृद्धि के लिए यूपी एग्रीज नामक एक नई योजना प्रारंभ की है। इस योजना का उद्देश्य कृषि उत्पादन को बढ़ावा देना तथा कृषि से जुड़े उद्योगों को प्रोत्साहित करना है। यह योजना विश्व बैंक की सहायता से लागू की जाएगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ की अध्यक्षता में विगत एक अक्टूबर को लखनऊ में संपन्न हुई मंत्रिमंडल की बैठक में इस महत्वाकांक्षी योजना को स्वीकृति दी गई।

इस योजना के अंतर्गत किसानों को नई तकनीकों का प्रशिक्षण देने के लिए विदेश भेजा जाएगा। विदेश में प्रशिक्षण प्राप्त किसान आधुनिक तकनीक से कृषि कर सकेंगे तथा अन्य किसान भाइयों को भी आवश्यक जानकारी उपलब्ध करवा सकेंगे। आधुनिक तकनीक से कृषि होने से उत्पादन में वृद्धि होगी तथा फसल की गुणवत्ता में भी सुधार होगा। इससे किसानों की आमदनी में भी वृद्धि होगी। सरकार द्वारा किसानों को कृषि क्षेत्र के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य मूंगफली, मिर्च और हरी मटर आदि फसलों के क्लस्टर और संबंधित उद्योगों के विकास को बढ़ावा देना है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना है कि उत्तर प्रदेश में 187.70 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि है। इसमें से 76 प्रतिशत भूमि कृषि के लिए उपयोग होती है। यद्यपि बुंदेलखंड, पूर्वांचल एवं विंध्य क्षेत्र में अभी सुधार की आवश्यकता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश का कृषि उत्पादन में 50 प्रतिशत योगदान है, जबकि पूर्वी उत्तर प्रदेश का योगदान केवल 28 प्रतिशत ही है। बुंदेलखंड की जनसंख्या सात प्रतिशत है, जबकि इसका कृषि उत्पादन में योगदान मात्र 5.5 प्रतिशत ही है, जो बहुत कम है।

चार हजार करोड़ रुपये की इस परियोजना के माध्यम से किसानों, कृषक समूहों, मत्स्य पालकों और कृषि क्षेत्र की सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम इकाइयों को सीधा लाभ प्राप्त होगा। यह परियोजना प्रदेश के 28 जिलों में लागू की जाएगी। इसमें 21 जिले पूर्वी उत्तर प्रदेश के एवं सात

जिले बुंदेलखंड के हैं। इस योजना के लागू होने से दस लाख किसानों को प्रत्यक्ष सहायता प्राप्त होगी, जिनमें 30 प्रतिशत महिला कृषक सम्मिलित हैं। सरकार प्रत्येक क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा दे रही है। इस योजना से कृषि से जुड़ी महिलाओं को लाभ होगा। उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा तथा वह पहले से अधिक आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनेंगी।

प्रदेश की योगी आदित्यनाथ की सरकार ने राज्य के किसानों की समृद्धि के लिए यूपी एग्रीज नामक एक नई योजना प्रारंभ की है। इस योजना का उद्देश्य कृषि उत्पादन को बढ़ावा देना तथा कृषि से जुड़े उद्योगों को प्रोत्साहित करना है। यह योजना विश्व बैंक की सहायता से लागू की जाएगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ की अध्यक्षता में विगत एक अक्टूबर को लखनऊ में संपन्न हुई मंत्रिमंडल की बैठक में इस महत्वाकांक्षी योजना को स्वीकृति दी गई।

उत्तर प्रदेश सरकार के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही का कहना है कि राज्य में नौ जलवायु क्षेत्र हैं। इनमें बुंदेलखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश की उत्पादकता पश्चिम की तुलना में बहुत कम है। उन्होंने कहा कि परियोजना का क्रियान्वयन झांसी, चित्रकूट, गोरखपुर, वाराणसी, विंध्य, आजमगढ़, बस्ती और देवीपाटन मंडल के जिलों में किया जाएगा। झांसी और चित्रकूट मंडल के अंतर्गत आने वाले जिले बुंदेलखंड संभाग में हैं, जबकि शेष अन्यज परिक्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश के अंतर्गत आते हैं।

इस योजना से सरकार को बहुत आशा है। वास्तव में यह योजना उत्तर प्रदेश को देश के कृषि क्षेत्र का प्रमुख केंद्र बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पग माना जा रही है। निरूसंदेह यह योजना किसानों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगी।

उल्लेखनीय है कि योगी सरकार कृषि की आधुनिक विधियों को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ परम्परागत जैविक खेती को भी प्रोत्साहित कर रही है। भारत में प्राचीन काल से ही जैविक खेती होती रही है। भारत परम्परागत रूप से विश्व का सबसे बड़ा जैविक कृषि करने वाला देश है। अब भी देश के बहुत बड़े भू–भाग में परम्परागत ज्ञान के आधार पर जैविक खेती की जाती है। जैविक खादों पर आधारित पारम्परिक खेती को जैविक खेती कहा जाता है। बदलते समय के साथ कृषि भूमि कम होने लगी और बढ़ती जनसंख्या का भार सीमित कृष क्षेत्र पर आ गया। ऐसी स्थिति में अधिक से अधिक उत्पादन लेने की होड़ लग गई। रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग किया जाने लगा। इससे उत्पादन तो बढ़ गया, परंतु दिनों–दिन भूमि की उर्वरा शक्ति कम होने लगी। निरूसंदेह रासायनिक उर्वरकों के कारण उत्पादन बढ़ा, किन्तु इस तरह अधिक समय तक खेती नहीं की जा सकती। इसे देखते हुए पारम्परिक जैविक खेती और भी महत्वपूर्ण हो गई है। आज विश्व भर में जैविक खाद्य के लिए मांग में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। जैविक खेती की तकनीक को बढ़ावा मिलने से देश इन खाद्य पदार्थों के विशाल निर्यात की संभावनाओं को साकार कर सकता है।

इस सबको ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने परम्परागत कृषि विकास योजना प्रारम्भ की है। उत्तर प्रदेश में भी परम्परागत जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके प्रथम चरण में राज्य के 63 जिलों के 68 हजार हेक्टेयर रकबे में जैविक खेती की योजना बनाई गई थी। गंगा तट के सभी जिलों को इसमें सम्मिलित किया गया था। इनमें 36 जिले परम्परागत कृषि वाले हैं, जिनमें झांसी, जालौन, ललितपुर, बांदा, हमीरपुर, महोबा, चित्रकूट, मिर्जापुर, गोरखपुर, पीलीभीत, गोंडा, आगरा, मथुरा, वाराणसी, कौशांबी, फतेहपुर, देवरिया, फर्रुखाबाद, उन्नाव, रायबरेली, बहराईच, बाराबंकी, श्रावस्ती, फैजाबाद, कानपुर देहात, आजमगढ़, सुल्तानपुर,कानपुर नगर, फिरोजाबाद, बदांयू, अमरोहा, बिजनौर, चंदौली, सोनभद्र, बलरामपुर एवं सिद्धार्थनगर सम्मिलित हैं। इसमें 27 जिले नमामि गंगे परियोजना वाले हैं, जिनमें चंदौली, वाराणसी, संत रविदास नगर, मिर्जापुर, प्रयागराज, फतेहपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली, कानुपर नगर, कन्नौज, अलीगढ़, अमरोहा, संभल, हापुड़, मेरठ, मुजफ्फरनगर, बलिया, गाजीपुर, कौशांबी, उन्नाव, फर्रुखाबाद, हरदोई, शाहजहांपुर, बदायूं, कासगंज, बुलंदशहर एवं बिजनौर सम्मिलित हैं।

खेती नियोजित रूप से करने एवं निगरानी के लिए सरकार का एप्रोच क्लस्टर खेती का होगा। प्रत्येक क्लस्टर 50 एकड़ का होगा। राज्य सरकार जैविक खेती करने वाले किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए तीन वर्ष में प्रति क्लस्टर 10 लाख रुपये का अनुदान प्रदान करने का प्रावधान है। इसमें से प्रथम वर्ष में तीन लाख 30 हजार रुपये प्रदान किए जाएंगे, जबकि द्वितीय वर्ष में तीन लाख 40 हजार रुपये एवं तृतीय वर्ष में तीन लाख 30 हजार रुपये प्रदान किए जाएंगे। देय राशि में से 38 प्रतिशत क्लस्टर के गठन, किसानों की क्षमता बढ़ाने, मूल्य संवर्धन, ब्रांडिंग एवं पैकेजिंग आदि पर व्यय होगा।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन के अंतर्गत मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन का एक सविस्तारित घटक है। परम्परागत कृषि विकास योजना के अंतर्गत जैविक खेती को क्लस्टर पद्धति और प्रमाणीकरण और भागीदारिता गारंटी प्रणाली द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। कृषि एवं सहकारिता विभाग द्वारा वर्ष 2015–16 से एक नई परम्परागत कृषि विकास योजना का शुभारंभ किया गया है। इस योजना का उद्देश्य जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण और विपणन को प्रोत्साहन करना है। इस योजना के अंतर्गत सम्मिलित घटक सहभागिता जैविक प्रतिभूति प्रणाली या प्रमाणीकरण और भागीदारिता गारंटी प्रणाली को सुदृढ़ता प्रदान करने के तारतम्य में हैं।

इस योजना का उद्देश्य प्रमाणित जैविक खेती के माध्यम से वाणिज्यिक जैविक उत्पादन को बढ़ावा देना है। उपज को कीटनाशक मुक्त करके उपभोक्ता को पौष्टिक खाद्यान्न उपलब्ध कराना है। जैविक खेती से किसानों की आय में बढ़ोतरी होगी और व्यापारियों को भी बाजार उपलब्ध होगा। इसके साथ ही यह योजना उत्पादन के लिए प्राकृतिक संसाधन जुटाने के लिए भी किसानों को प्रेरित करेगी। किसान प्राकृतिक वस्तुओं का प्रयोग करके भरपूर और उन्नत फसल उगा सकेंगे।

परम्परागत कृषि विकास योजना प्रथम व्यापक योजना है, जिसका कार्यान्वयन प्रति 20 हेक्टेयर के क्लस्टर

> **योगी सरकार कृषि की आधुनिक विधियों को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ परम्परागत जैविक खेती को भी प्रोत्साहित कर रही है। भारत में प्राचीन काल से ही जैविक खेती होती रही है। भारत परम्परागत रूप से विश्व का सबसे बड़ा जैविक कृषि करने वाला देश है।**

आधार पर राज्य सरकारों द्वारा किया जाता है। किसान हित समूहों को जैविक खेती आरंभ करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। क्लस्टर के अंतर्गत किसानों को अधिकतम एक हेक्टेयर तक की वित्तीय सहायता दी जाती है। जैविक खेती का कार्य आरंभ करने के लिए 50 या उससे अधिक ऐसे किसान एक क्लस्टर बनाएंगे, जिनके पास 50 एकड़ भूमि होगी। इस प्रकार तीन वर्षों की अवधि में जैविक खेती के अंतर्गत 10 हजार क्लस्टर बनाए जाएंगे, जो पांच लाख एकड़ के क्षेत्र को कवर करेंगे। प्रमाणीकरण पर व्यय के लिए किसानों पर कोई भार या दायित्व नहीं होगा। फसलों की बुआई के लिए, बीज खरीदने और उपज को बाजार में पहुंचाने के लिए हर किसान को तीन वर्षों में प्रति एकड़ 20 हजार रुपये दिए जाएंगे। परम्परागत संसाधनों का उपयोग करके जैविक खेती को प्रोत्साहित किया जाएगा और जैविक उत्पादों को बाजार के साथ जोड़ा जाएगा। यह किसानों को सम्मिलित करके घरेलू उत्पादन और जैविक उत्पादों के प्रमाणीकरण को बढ़ाएगा।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री के अनुसार विश्व के कुछ वैज्ञानिक इसे 'डिफाल्ट ऑर्गेनिक' कहते हैं, परंतु हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जो किसान परम्परागत रूप से जैविक खेती कर रहे हैं, यह उनकी विवशता नहीं, उनकी पसंद है। आज वे रासायनिक खाद का प्रयोग नहीं करते तो यह उनकी अज्ञानता नहीं है, अपितु उन्होंने बहुत सोच–समझ कर ऐसा न करने का निर्णय किया है। इसलिए उनकी इस खेती की विधि को 'बाई डिफाल्ट' नहीं कहा जा सकता। भारत सरकार इस बात को स्वीकार करती है कि पिछले कुछ दशकों में खेतों में रासायनिक खाद के अंधाधुंध उपयोग ने यह प्रश्न पैदा कर दिया है कि इस प्रकार हम कितने दिन खेती कर सकेंगे? रासायनिक खाद युक्त खेती से पर्यावरण के साथ सामाजिक–आर्थिक और उत्पादन से जुड़े मुद्दे भी हैं, जो हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। अब देश में खाद्य आपूर्ति की कोई समस्या नही है, लेकिन देश की बढ़ती जनसंख्या को सुरक्षित एवं पौष्टिक खाद्यान्न उपलब्ध कराने की महत्वपूर्ण चुनौती का कार्य अभी शेष है, हमारी निर्भरता रासायनिक खेती पर हो गई है, जिसमें हम रासायनिक उर्वरक, कीट–रोग नाशी एवं अन्य रसायनों का प्रयोग करके उत्पादन तो बढ़ गया, लेकिन अनियंत्रित उपयोग से असुरक्षित खाद्यान्न उत्पन्न करने की समस्या पनप गई है। ◆

मो. : 8750820740

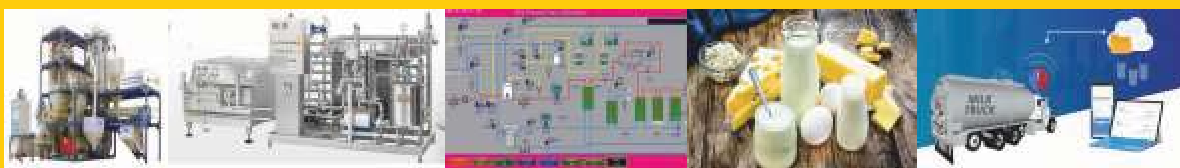

उत्तर प्रदेश दुग्धशाला विकास एवं दुग्ध उत्पाद प्रोत्साहन नीति-2022 से डेयरी उद्यम को प्रोत्साहन

पूंजीगत अनुदान

नवीन व विस्तारित दुग्ध प्रसंस्करण इकाई को ₹5 करोड़ तक का अनुदान

ब्याज उपादान

देय ब्याज दर के 5% का 5 वर्षों हेतु ₹1 से 10 करोड़ तक की प्रतिपूर्ति

- नवीन व विस्तारित दुग्ध प्रसंस्करण इकाई
- दुग्धशाला के अंदर तकनीकी उन्नयन व बाहर फील्ड में नवीन टेक्नोलॉजी
- नवीन व विस्तारित पशु आहार इकाई
- कोल्ड चेन की स्थापना
- मूल्य संवर्द्धित दुग्ध उत्पाद इकाई

बाजार विकास एवं ब्रांड प्रोत्साहन प्राविधान

परिवहन पर होने वाले वास्तविक व्यय का 25%, जो ₹20 लाख व Freight on Board मूल्य का 20%, अधिकतम ₹40 लाख

मानकीकरण प्रोत्साहन प्राविधान

टेस्टिंग चार्ज के सापेक्ष 50%, अधिकतम ₹5 लाख अनुदान

पेटेन्ट डिजाइन पंजीकरण प्राविधान

फीस का 75%, अधिकतम ₹5 लाख अनुदान

विद्युत शुल्क

10 वर्ष की अवधि में भुगतान किए गए विद्युत शुल्क की प्रतिपूर्ति

स्टाम्प शुल्क

शत प्रतिशत प्रतिपूर्ति

अधिक जानकारी/गाइडलाइन के लिए विभागीय वेबसाइट पर जाएं - updairydevelopment.gov.in या जनपदीय उप दुग्धशाला विकास अधिकारी से संपर्क करें।

दुग्धशाला विकास विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

सोलर रूफटॉप लगवाएं

आकर्षक अनुदान एवं बिजली बिल में राहत पाएं

पीएम सूर्य घर : मुफ़्त बिजली योजना

योजना के अंतर्गत 300 यूनिट मुफ़्त बिजली

संयंत्र की क्षमता	केंद्र सरकार का अनुदान (रु.)	राज्य सरकार का अनुदान (रु.)	कुल अनुमन्य अनुदान (रु.)
1 KW	30,000	15,000	45,000
2 KW	60,000	30,000	90,000
3 KW	78,000	30,000	1,08,000
4 KW	78,000	30,000	1,08,000
5 KW	78,000	30,000	1,08,000

- प्लांट की अनुमानित लागत ₹60,000 प्रति किलोवाट।
- सोलर पैनलों की कार्य क्षमता अवधि लगभग 25 वर्ष।
- 3 KW का प्लांट मात्र ₹1800/- की आसान ईएमआई पर लगवाएं।
- मात्र 7% की ब्याज दर पर बैंक लोन।
- सोलर प्लांट कमीशनिंग के उपरांत सब्सिडी डी.बी.टी. द्वारा सीधे लाभार्थी के खाते में।
- बिजली बिल में दो तिहाई तक की बचत।
- यूपीनेडा में पंजीकृत वेंडर के माध्यम से ही सोलर रूफटॉप प्लांट लगवाएं। वेंडर का चयन ध्यानपूर्वक करें।

योजना का लाभ उठाने के लिए शीघ्र आवेदन करें -

https://pmsuryaghar.gov.in/

किसी भी प्रकार की समस्या/शिकायत के लिए वेबसाइट

https://upnedasolarsamadhan.in पर जाएं।

अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश एन. भार्गव, प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ द्वारा मुद्रित एवं प्रभारी सम्पादक : दिनेश कुमार गुप्ता